भजन-मंजूषा

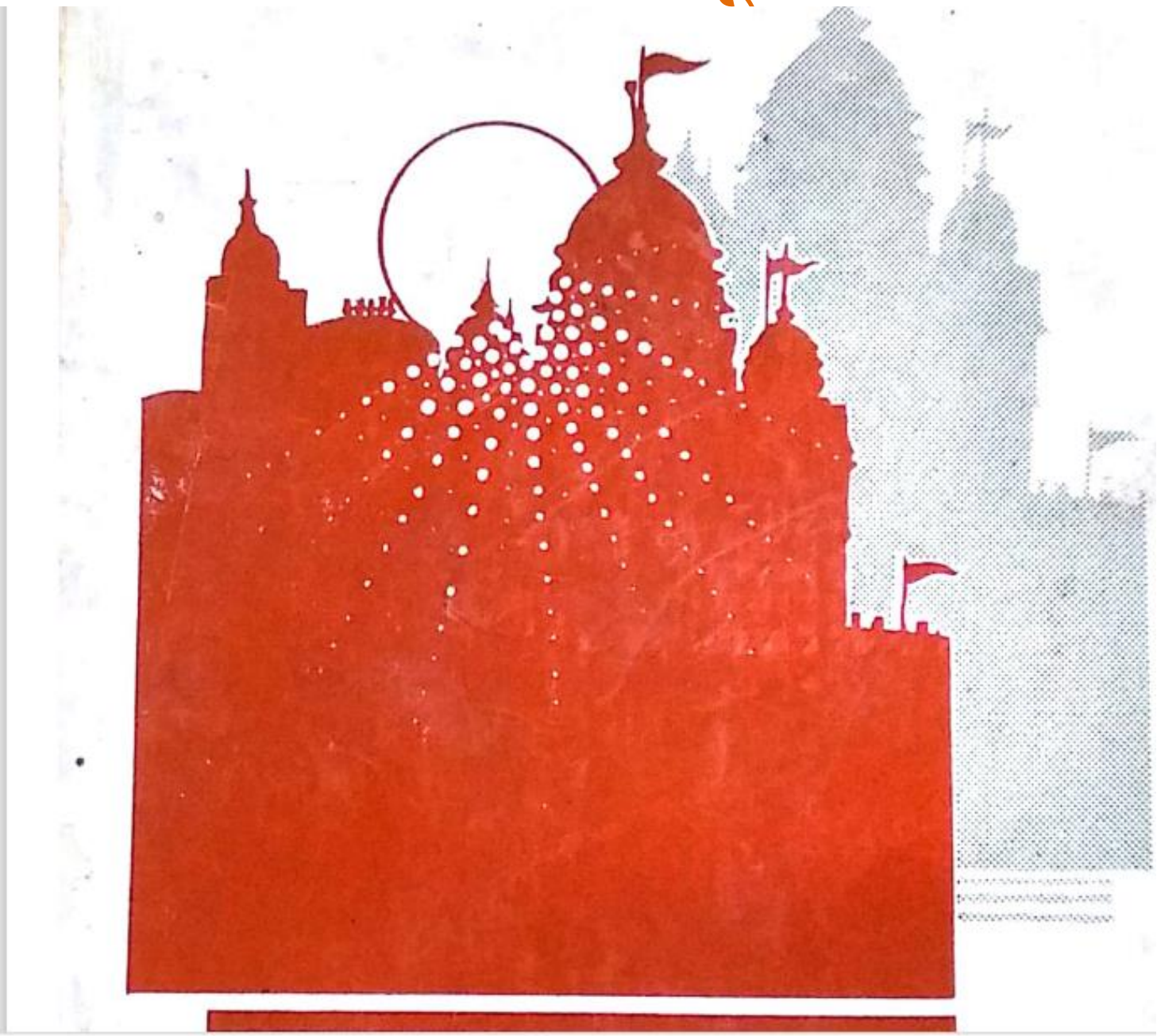

रामाश्रम सत्संग डिजिटल प्रकाशन

प्रकाशक:

आचार्य एवं अध्यक्ष

रामाश्रम सत्संग (रजि.), ग़ाज़ियाबाद (उ.प्र.)

प्रथम संस्करण मार्च २०२४ ग़ाज़ियाबाद (उ.प्र.)

सर्वाधिकार सुरक्षित

मूल्य : निःशुल्क

प्राप्ति स्रोत :

वेबसाइट, whatsapp, फेसबुक

रामाश्रम सत्संग (रजि.), ग़ाज़ियाबाद (उ.प्र.)

मुद्रण :

रामाश्रम सत्संग डिजिटल प्रकाशन, **ग़ाज़ियाबाद (उ.प्र.)** ,

E-297, शास्त्री नगर, ग़ाज़ियाबाद (उ.प्र.)

हमारे 'भजन-संग्रह' के प्रथम संस्करण की प्रस्तावना

इस छोटी सी पुस्तिका में उन गिने चुने भजनों का संकलन किया गया है जिनको जन-समूह बरसों से भक्ति भाव से पढता आया है ! पढ़ने वालों के हृदय में नैतिक भावना जागे, प्रेम-भाव उदय हो और उनका मन ईश्वरोन्मुख हो, इस भावना से रामाश्रम सत्संग की ओर से यह पुस्तिका छापी गयी है ! पूजा पर बैठने से पहले यदि 2-4 भजन प्रेम पूर्वक पढ़ लिए जायें तो उस स्थान का वायुमण्डल शुद्ध हो जाता है ! आशा है कि सब ईश्वर प्रेमी इससे लाभ उठायेंगे !

सिकंदराबाद (यू.पी) (डा.) श्रीकृष्ण लाल

15-08-1960. आचार्य,रामाश्रम सत्संग

शुभाशीष

रामाश्रम सत्संग द्वारा प्रकाशित पुष्टिका भजन संग्रह को समाप्त हुए कई वर्ष हो गये परन्तु उसकी मांग अभी तक होती रही है। इस नये संकलन में उसको संशोधित और परिवर्धित कराके भजन-मंजूषा' नाम से यह नई पुस्तिका भक्तजनों के सम्मुख प्रस्तुत करने में मुझे बड़ी प्रसन्नता होती है मेरा विश्वास है कि प्रेमीजन इससे पूरा लाभ उठायेंगे।

इस 'मंजूषा' को यह स्वरूप देने में अपने भाई श्री सतीश वर्मा जी (दिल्ली) का योगदान व प्रयास सराहनीय हैं तथा मुद्रण और प्रकाशन में जो परिश्रम और सेवा डा० महेश चन्द्र जी ग़ाज़ियाबाद (उ.प्र.) ने की है उनके लिये मैं सत्संग-परिवार और प्रेमी भक्तजनों की ओर से उनके प्रति आभार प्रकट करता है।

ईश्वर आप सबको अपने प्रेम से मालामाल करें।

नयी दिल्ली **--- करतार सिंह**

फाल्गुनी पूर्णिमा **आचार्य, रामाश्रम सत्संग**

दिनांक ११-३-१९९०- **गाजियाबाद (उत्तर प्रवेश)**

सम्पादकीय निवेदन

प्रेमी भक्तजन की सेवा में प्रस्तुत 'भजन मंजुषा' हेतु अमर कवियों और उनकी स्फूर्तिदायक भक्ति रचनाओं के विपुल भंडार में से सीमित चयन और संकलन करना एक कठिन प्रक्रिया रही है ! हिन्दी भाषा को स्वरुप देने और साज-श्रृंगार से सौंदर्य बढ़ाने वाली, ईश्वर प्रेम में प्रवाहित, विविध प्रान्तीय अंचलों से विचरण करती, सगुण और निर्गुण धाराओं के संगम-स्नान सदृश, अमृतवाणी का आनन्द एक ही संकलन में उपलब्ध कराया जा सके ऐसा हमारा प्रयास रहा है ! एतदर्थ, इस 'मंजुषा' में विभिन्न स्रोतों से प्राप्त की गयी ५१ दिवंगत संत, सूफी एवं भक्त कवियों की लगभग पौनों दो सौ काव्य कृतियों को समाहित किया गया है ! विशेषतः पाँच स्वनाम-धन्य महान विभूतियों - तुलसी, सूर, कबीर, नानक, मीरा की अमूल्य भजन-पदावली को अधिकतम संजोया गया है ! फिर भी जो नाम अथवा कवितायेँ - हमारी अपनी सीमाओं की परिधि की विवशता के कारण - इस पुस्तक में न आ सकीं हों, उनके लिए तथा अन्य
त्रुटियों के लिए हम क्षमाप्रार्थी हैं !

अन्ततः इस कार्य की सफलता के लिए हम अत्यन्त आभारी हैं पूज्य डॉ. करतार सिंह जी महाराज के, जिनका आशीर्वाद संचालन एवं सतत प्रोत्साहन पाकर ही यह कार्य संपन्न हो सका है ! साथ ही, भांति-भांति के सहयोग, सेवा, सहायता और परामर्श देने वाले सभी आदरणीय भाई बहनों के प्रति भी हम बहुत कृतज्ञ और अनुग्रहीत हैं, विशेषतः प्रेस का कार्य करने वालों के !

रामाश्रम सत्संग (रजि०) : एक संक्षिप्त परिचय

❖ रामाश्रम सत्संग की स्थापना फ़तहगढ़ निवासी निर्वाण- प्राप्त महात्मा रामचन्द्र उर्फ लाला जो साहब की प्रेरणा से उनके परम प्रिय शिष्य डा० श्रीकृष्ण लाल जी महाराज ने की। वर्तमान अध्यक्ष एवं प्रधान आचार्य हैं: दिल्ली निवासी डा०करतार सिंह जी ।

❖ मानव जीवन के चरम: संस्था का प्रमुख उद्देश्य है लक्ष्य, 'मोक्ष' की प्राप्ति के लिए किसी सिद्ध पुरुष अर्थात समर्थ गुरु के माध्यम व मार्ग दर्शन से प्रयास करना और सफलता पाना । साधना का आधार संतमत या सहज मार्ग की मूलभूत प्रणाली है - धारणा, ध्यान एवं समाधि, जिनके लिए सहायक होते हैं : सतगुरु, सत्संग और सतनाम (ओ३म् आदि) ।

❖ इस संस्था में सभी धर्मो के महापुरुषों व धर्मग्रंथों, उपदेशों व सिद्धांतों का समान आदर-सम्मान किया जाता है । देश, काल तथा समाज के नियमों तथा प्रचलित मर्यादाओं को निभाते हुए जीवन को सुधारना और गृहस्थ, परिवार, समाज व देश की सेवा में सभी कर्त्तव्यों का पालन करना, साधकों के कर्मक्षेत्र की सार्थकता है।

❖ जीवन में सात्विकता एवं व्यवहार में सरलता और विनम्रता को दिनों-दिन बढ़ाते हुए ईमानदारी की कमाई की आवश्यकता है। रोजी-रोटी के लिए कोई भी काम छोटा- बड़ानहीं होता; महत्व उसको करने की भावना का है। ईश्वर ने हमें जो भी करने को दिया है उसे हमको पूरी प्रामाणिकता से प्रभु की पूजा मानकर ही करना चाहिए।

❖ हमारा मुखपत्र 'रामसंदेश' मासिक है जो लगभग ३५ वर्ष से बिना किसी विज्ञापन के निकलता आ रहा है। इसके साथ ही लगभग २० पुस्तकें भी प्रकाशित की जा चुकी हैं जो कि भंडारों की बुक स्टॉल पर तथा मैनेजर, राम संदेश, ६- १०, रामा-कृष्णा कॉलोनी, जी०टी० रोड, ग़ाजियाबाद के पास उपलब्ध हैं ।

ॐ

मंगलाचरण

बन्दउँ गुरु पद कञ्ज, कृपा सिन्धु नर रूप हरि ।
महामोह तम पुँज, जासु वचन रविकर निकर ॥
बन्दउँ गुरु पद पदुम परागा, सुरुचि सुवास सरस अनुरागा ।
अमिअ मूरिमय चूरन चारू, समन, सकल भव रुजि परिवारू ।।
सुकृति, संभु तन विमल विभूती, मंजुल मंगल मोदप्रसूती ।
जन मन मंजु मुकुर मल हरनी, किए तिलक गुन गन बस करनी ।।
श्री गुरु पद नख मनि गन ज्योती, सुमिरत दिव्य दृष्टि हिय होती ।
दलन मोह तम सो सप्रकासू, बड़े भाग्य उर आवहिं जासू ।।
उघरहिं विमल विलोचन हिय के, मिह दोष दुख भव रजनी के ।
सूझहिं रामचरित मनि मानिक, गुप्त प्रगट जहँ जो जेहि खानिक ।।

X X X

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुसाक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः ॥

X X X

त्वमेव माता च पिता त्वमेवः त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेवः ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेवः त्वमेव सर्वम् मम देव देवः ॥

X X X

ओ३म् सहनाववतु । सहनौ भुनक्तु । सहवीर्य्यं करवावहै ।
तेजस्विना वधीतमस्तु । मा विद्विषा वहै ॥

गुरु वन्दना

(प्रातः काल)

हे दीनबन्धु दयालु गुरु, केहि भांति तब गुण गाऊँ मैं !
तुम्हरे पवित्र चरित्र, केहि विधि नाथ कह के सुनाऊँ मैं !!
जिव्हा अपावन है मेरी, गुरु नाम कैसे लीजिये !
मन फँस रहा भव-जाल में वह किस तरह प्रभु दीजिये !!
धन धान्य माया रूप हैं, क्योंकर निछावर कीजिये !
संसार सागर में फँसा, गुरु-ध्यान कैसे कीजिये !!
तन कैसे अर्पण कर सकूँ, यह तो महा पापी अधम !
धन-धान्य और मन दे के गुरु, तुम से नहीं उद्धार हम !!
श्रद्धा सुमिरनी भेंट कर, मैं दीन हो चरणों पड़ा !
मैं पतित, तुम पतित पावन, आपका है आसरा !!

भव-सिन्धु में हूँ फँस रहा, गुरुदेव मुझे उबारिये !
गहि बाँह दीनानाथ, अपराधी को पार लगाइये !!
जो दीन हो चरणों पड़े, हे नाथ ! वे सारे तरे !
तेरा भिखारी तुझ बिना, प्रभु आसरा किसका करे !!
मैं दीन हूँ, तुम दीन बन्धु, मैं अधम तुम नाथ हो !
मैं हूँ अनाथ कृपा-निधान, तो तुम अनाथों के नाथ हो !!
माता-पिता सुत-भ्रात-भार्या, कोई साथ न जायेंगे !
उस पाक-कुंभी नर्क में, कोई न हाथ बटायेंगे !!
यह सोच के तब शरण आया, अब ठिकाना है नहीं !
बस पार कर दो मेरी नौका, और अपना है नहीं !!

गुरु वन्दना

(सायं-काल)

हे दीनबन्धु दयालु गुरु, स्वीकार कोटि प्रणाम हो ।
महिमा तुम्हारी है अगम अतिशय पवित्र महान हो ।।
माया की दलदल में फसा हूँ, बस नहीं चलता जरा ।
सब हौसले हारा हुआ हूँ आपका है आसरा ॥
हैं आपके पद कंज निर्मल, हरण भव-संताप हैं ।
फिर भी प्रभो ! होकर तुम्हारा शेष मेरे पाप हैं ॥
हूँ दीन-हीन दुखी अकिंचन लेश अधिकारी नहीं ।
फिर भी पतित को त्राण देना, तुमको कुछ भारी नहीं ।।
मन एक और अनेक बन्धन में बंधा है रो रहा ।
कोमल हृदय समरस्थ ! सन्मुख आपके सब हो रहा ॥
अति दुखित हैं, अति विकल हूँ मैं जल रहा त्रय ताप से ।
प्रभु शान्ति जल बरसाईये, आशा लगी है आप से॥
मेरे महादानी पिता मुझ पर अनुग्रह कीजिये ।
मन मधुप हो पद-पद्म पर वरदान ऐसा दीजिये॥
नहि नर्क से भय कुछ मुझे, नहिं स्वर्ग की है कामना।
जहाँ भी रहूँ, क्षण भर न भूलूँ, दीन की है याचना ॥
संतोष अब होता नहीं, हे नाथ ! करुणा कीजिये ।
निज से विलग मत कीजिये, मन प्रेम से भर दीजिये॥
मैं हूँ शरण शरणागते, हे दीनबन्धु दयानिधे ।
भव-ताप-हरण नमामिते, हे पूज्यतम करुणानिधे ॥

परम संत पूज्य महात्मा डॉ श्रीकृष्ण लाल जी महाराज

(जन्म: 15 अक्टूबर, 1894; निर्वाण: 18 मई, 1970)

अनुक्रमणिका

भजन शीर्षक

तुलसीदास

१. तू दयालु, दीन हों
२. ऐसो को उदार जग मांहीं
३.रघुवर तुमको मेरी लाज
४ जाके प्रिय न राम – बेदेही
५.माधव मोह पास किमि टूटै
६. ऐसी मूढ़ता या मन की
७. यह बिनती रघुवीर गुसाई
८. ममता तू न गई मेरे मन ते
९. अब लौं नसानी, अब न नसैहौं
१०.जाऊँ कहाँ तजि चरन तिहारे
११. कबहुँक हो यहि रहनि रहौंगो
१२. भजु मन राम चरन सुखदाई.....

भक्त सूरदास

१३. हे गोविन्द, हे गोपाल
१४. दीनन दुख हरण देव
१५. सुने री मैंने निर्बल के बल राम
१६. प्रभु मोरे अवगुण चित न धरो
१७. निसदिन बरसत नयन हमारे
१८. अब की टेक हमारी
१९. छाँड़ि मन हरि बिमुखन को संग
२०. अंखियाँ हरि दरसन की प्यासो
२१ कहा कमी जाके राम धनी

२२. अब मै नाच्यो बहुत गोपाल
२३. तुम मेरी राखो लाज हरी
२४. भजुमन रामचरन सुखदाई

महात्मा कबीर

२५. झीनो रे झीनी चदरिया
२६. रस गगन-गुफा में अजर झरै
२७. बोस गये दिन बिना रे
२८. भजो रे भैया राम गोविन्द हरी
२९. माया महा ठगिनि हम जानो
३०. कौनो ठगवा नगरिया लुटल हो
३१. घुंघट के पट खोल रे
३२. रहना नहि देस बिराना है
३३. साधो सहज समाधी भली
३४. तोरी गठरी में लागे चोर
३५. चलना है दूर मुसाफिर
३६. भजन बिन हीरा जनम गंवायो

गुरु नानक देव गुरबानी

३७. ठाकुर तुम सरनाई आया
३८. गाइये गुण गोपाल कृपानिधि
३९. प्रीतम जान लेहो मन माही
४०. राम सुमिर राम सुमिर
४१. जगत में झूठी देखी प्रीत
४२. जिह्वा एक कवन गुन कहिये
४३. सुमरन कर ले मेरे मना
४४. नाम जपन क्यों छोड़ दिया
४५. सरनी आयो नाथ निधान
४६. हरि बिनु तेरो कोन सहाई

४७. मुरसिद मेरा मरहमी
४८. रे मन एह सांची जिय धार

मीरा बाई

४९. मेरे तो गिरधर गोपाल
५०. राम नाम रस पीजै मनुआ
५१.दरस बिनु दुखन लागे नैन
५२. राम मिलन के काज सखी
५३. मेरो लागो लटक गुरु चरनन की
५४. म्हाने चाकर राखो जी
५५. तुम सुणो दयाल म्हारी अर्जी
५६. म्हारे जनम मरण रो साथी
५७. पग घुंघरू बाँध मीरा नाचो रे
५८. माई री मै तो लिया गोविन्दा मोल
५९. बसो मोरे नैनण में नन्दलाल
६०. राणा जी, मैं तो गोबिन्द के गुण गासू

भक्त रैदास

६१. अब कैसे छुटेनाम रट लागो
६२. जो तुम तोरो राम मैं नाहिरूं तो
६३. सो कहा जानै पीर पराई
६४. राम बिन संसय गांठी न टूटै
६५. राम में पूजा कहाँ चढ़ाऊँ
६६. जब राम नाम कहि गावैगा

दादू दयाल

६७. तू सांचा साहिब मेरा
६८. अहो नर नीका है हरिनाम
६९. मेरे मन भैया राम कहो रे
७०. नूर रहा भरपूर अमीरस पीजिये

७१. क्यों विसरे मेरा पीव पियारा
७२. तू तो है गुरुदेव हमारा

गुरु तेग बहादुर
७३. जो नर दुख मैं दुःख नहिं मानै
७४. काहे रे बन खोजन जाई
७५. बिसर गई सब तात पराई
७६. साधो मन का मान त्यागो
७७. अब मैं कवन उपाय करौ
७८. चित्त चरन कमल का आसरा
चरनदास
७९. गुरु हमरे प्रेम पियायौ हो
८०. जिन्हें हरि भगत पियारी हो
८१. पोल प्याला हो जा मतवाला
८२. टुक रंग महल में आव
८३. प्रेमनगर के माहि चलौ सखी
८४. झुलत कोई-कोई सन्त
सहजोबाई
८५. तेरी गति किनहूं न जानी हो
८६. भया हरि रस पी मतवारा
८७. साधो सहज समाधी भली
८८. हमारे गुरु पूरन दातार
८९. हमारे गुरु वचनन की टेक
९०. अब तुम अपनी ओर निहारो
ब्रह्मानन्द
९१. हरिनाम सुमर सुखधाम
९२. नाम लिया हरि का जिसने

९३. बाहर ढूंढन जा मत सजना
९४. आज सखो सतगुरु घर आये
९५. पिया के मनभावन को बतियां
९६. ऐसी करी गुरुदेव दया
पलटूदास
९७. यही समय गुरु पांय में
९८. धुबिया फिर मर जाएमा
९९. चोला भया पुराना
१०० जीवन मुक्त जियती सब जाना
१०१. पलटू उधर जो पलटिगे
१०२. साहब वही फकीर है
गुरु गोबिन्द सिंह
१०३. प्रभ जू तो कह लाज हमारी
१०४. मैं हो परम पुरुख को दासा
१०५. प्रानी परम पुरुख पग लागो
नरसी महतो
१०६ नरसीलो टेर लगावे जी
१०७. दर्शन दो घनश्याम
१०८. नाथ थारे सरणे आयो जो
मलूकदास
१०९. राम कहो, राम कहो, वावरे
११०. हरि समान दाता कोउ नाहि
१११. तेरा मै दीदार दीवाना
दरिया साहब
११२. राम नाम मेरा प्रान अधार
११३. बाबुल कैसन विसरो जाई

११४. सो मेरे मना कब भाजिहौं सतनाम
तुलसी साहब
११५. तोसे अर्ज करूँ सांवरिया
११६. दिल का जरा साफ कर
११७. बार बार बी

यारी साहब
११८. बिरहनी मंदिर दियना बार
११९. सतगुरु है सतपुरुष अकेला
१२०. उडु उडुरे बिहंगम चढ़ अकास

रसिक बिहारी' बनोठनी'
१२१. मै अपनी मनभावन लीनो
१२२. रतनारी हो थारी आँखड़ियाँ
१२३. हो झालो दे छे रसिया
जुगलप्रिया
१२४. सुनिये नाथ गरीब नियाज
१२५. नाथ अनाथन कीजानै री
१२६. श्री गुरुदेव भरोसो साँचो
रानी रूपकुँवरि
१२७. राखत आये लाज जनन की
१२८. हमारे प्रभु कब मिलिहै घनश्याम
१२९. करहु प्रभु भवसागर सों पार
ललित किशोरी
१३०. मन पछतैहौं भजन विनु कीने

१३१. लाभ कहाँ कंचन तन पाए
१३२. अब तो तोरई हाथ बिकानी

मज्जु केशी
१३३. सुख सजनि मिलै नहिं या जग में
१३४. मानहु प्यारे मोर सिखावन
१३५. आपन रूप परखिये आपै

नारायण स्वामी
१३६ प्रीतम तू मोहि प्रान ते प्यारो
१३७. जाहि लगन लगी घनस्याम की
१३८. मूरख छाँडि बृथा अभिमान

विद्यापति
१३९. माधव, कत तोरा करब बडाई
१४०. कखन हरब दुःख मोर

अमीर खुसरो
१४१. काहे को ब्याही विदेस रे
१४२ छाप तिलक सब कीनी
रसखान
१४३. मानूस हो तो वहां रसखान
१४४. सेस गनेस दिनेस महेस

गदाधर भट्ट
१४५. हरि हरि हरि हरि रट रसना
१४६. है हरितें हरिनाम बड़ेरो

प्राणसखा
१४७. मानुष के रिझायबे को
१४८. ऐहो नदनंदन जग वन्दन
यकरंग साहब
१४९. साँवरिया मन भाया रे
१५०. मितवा रे नेकी से बेड़ा पार

स्वामी हरिदास
१५१. गहौं मन सब रस की रसधार
१५२. हरि को ऐसो ही सब खेल

धर्म दास
१५३. गुरु पइयाँ लागूं नाम लखा दीजो रे
१५४. हम सत्यनाम के वयोपारी
नंद दास
१५५. राम कृष्ण कहिये उठि भोर
१५६. बसौ भूमी वृन्दावन धाम
मुजीब साहब
१५७. आज मैं तो लैहो गगरिया भराय
१५८. मोहे सोबत स्याम जगाय गयो
भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
१५९. प्यारे अब तो तारेहि बनिहै
१६० नाथ तुम अपनी ओर निहारो
बाबा मिहीदास
१६१- अन्तर के अन्तिम तह में गुरु हैं
१६२. ईसा पूछे हो रामा

स्वामी रामानन्द
१६३. कत जाइए , घर लाग्यो रंग

एकनाथ जी
१६४ गुरु-कृपान्जन पायो मेरे भाई
नामदेव जी
१६४. मै अंधुले की टेक

तुकाराम जी
१६६.वेद अनंत बोलिला

हजरत निजामुद्दीन
१६७. परबत बांस मंगाव मेरे बाबुल

शेख फरीद
१६८. जित्थू दिहारै धनवरी

बुल्ले शाह
१६९. साँई के नाम की बलि जाऊँ

बाबा मछंदर नाथ
१७०. बंगला अजब वन्या महाराज
हित हरिवंश
१७१. मोहन लाल के रंग राची
शिव नारायण
१७२. आनन्द झुला चाहे जो झूलन

कुंभन दास
१७३. भगत को कहा सीकरी काम

दुलन दास
१७४. नीकौ न लागै बिनु भजन

नागरी दास
१७५. हमारी सबही बात सुधारी

भगवत रसिक
१७६. नमो नमो वृदावन चन्द

सरस माधुरी
१७७. जगत में भगति बड़ी सुखदानी

विश्व कल्याण की शुभकामना

सब पर दया करो भगवान,
सब का भला करो भगवान।
सबके पाप हरो भगवान,
सब में आप रोमा भगवान।
अवगुण दूर करो भगवान,
सब में आप रमो भगवान्।
सब को सन्मति दे भगवान,
सबका सदा करो कल्याण।
अपनी शरण में ले लो राम,
अपना मुझे बना लो राम।

ईश्वर स्तुति

हे जग नायक विश्व विनायक, हे जग जीवन के धन है,
हे दुख भंजन जन मन रंजन, जय जय आनन्द के पन है ।

गुरुपमा जग जाता, मनुज पर नागर है,
हे निर्गुण हे निराकार प्रभु, निर्भय निगम निरंजन है।

व्यक्त तुम्ही अव्यक्त तुम्हीं हो, सतचित्त आनन्द रूपविभो ,
गुणागार गोतीत अगोचर, अनुभव गम्य अजेय प्रभो ।

सब के स्वामी अन्तर्यामी, पारब्रह्म परमेश्वर हे,
करुना सागर सब गुण आगर, सैट चित्त प्रेम निकेतन हे।

हे जगत्राता विश्व विधाता, हे सुख शान्ति निकेतन है,
प्रेम के सिन्धु, दोन के बन्धु, दुःख दारिद्र विनाशन हे।

नित्य अखण्ड, अनन्त अनादि, पूरण ब्रह्म सनातन हे ,
जग आश्रय जगपति जग वन्दन, अनुपम अलख निरंजन है।

'प्राणसखा' त्रिभुवन प्रतिपालक, जीवन के अवलम्बन है।
हे जगत्राता विश्व विधाता, हे सुख शान्ति निकेतन है।

भजन मंजूषा

(संत, सूफी तथा भक्त कवियों की प्रेरक अमृतवाणी)

संत तुलसीदास :

(१)

तू दयालु दीन हौं तू दानि हौं भिखारी,
हौं प्रसिद्ध पातकी तू पाप -पुंज हारी !
नाथ तू अनाथ को, अनाथ कौन मो सो ?
मो समान आरत नहीं, आरत हर तो सौं !
ब्रह्म तू, हौं जीव, तू ठाकुर, हौं चेरो,
तात, मात, गुरु, सखा, तू सब विधि हितु मेरो !
तोहि मोहि नाते अनेक मानिये जो भावै,
ज्यों त्यों ' तुलसी' कृपालु चरन-सरन पावै !

(२)

ऐसो को उदार जग माँही
बिन सेवा जो द्रवै दीन पर, राम सरिस कोऊ नाहीं !
जो गति जोग विराग जतन करि नहिं पावत मुनि ज्ञानी.
सो गति देत गीध सबरी कहँ, प्रभु न अधिक जिय जानी !
जो सम्पति दस सीस अरपि करि रावन सिब पहिं लीन्ही,
सो सम्पदा विभीषण कहँ अति सकुचि सहित हरि दीन्ही !
'तुलसीदास' सब भाँति सकल सुख जो चाहत मन मेरो,

तौ भजु राम काम सब पूरन क रहिं कृपानिधि तेरो !

(३)

रघुवर, तुमको मेरी लाज,

सदा सदा मैं सरन तिहारी, तुमहि गरीब निवाज़ !

पतित उधारन विरद तिहारो, स्रवनन सुनी आवाज़,

हौं तो पतित पुरातन कहिये, पार उतारो जहाज़ !

अध खण्डन, दुःख-भंजन जन के, यही तिहारो काज,

'तुलसीदास ' पर किरपा करिये, भक्ति दान देहु आज !

(४)

जाके प्रिय न राम वैदेही

तजिये ताहि कोटि बैरी सम, जद्धपि परम सनेही !

तज्यो पिता प्रहलाद, विभीषण बंधु, भरत महतारी,

बलि गुरु तज्यो, कंत ब्रज-बनितन , भये मुद मंगलकारी !

नाते नेह राम के मनियत सुहृद सुसेव्य जहाँ लौं,

अंजन कहा आंखि जेहि फूटै बहुतक कहौं कहाँ लौं !

'तुलसी' सो सब भाँति परम हित पूज्य प्राण ते प्यारो,

जा सो होय सनेह रामपद , एतो मतो हमारो !

(५)

माधव, मोह पास किमि टूटै ?

बाहर कोटि उपाय करिय, अ भ्यन्तर ग्रन्थि न छूटै !

घृतपूरन कराइ अन्तरगत, ससि प्र तिबिम्ब दिखावै,

ईंधन अगन लगाय कल्पशत, औटत नास न पावै !

तरु कोटर में बसैं विहग, तरु काटै मरै न जैसे,

साधन करिय विचार-हीन, मन शुद्ध होय नहिं तेसै !

'तुलसीदास' हरि गुरु करुणा बिनु, विमल विवेक न होई,

बिनु विवेक संसार बहुरि, विधि, पार न पावै कोई !

3.

(६)

ऐसी मूढ़ता या मन की

परिहरि राम भगति सर सरिता, आस करत ओस कन की !

धूम समूह निरखि चातक ज्यों, तृषित जानि मति घन की,

नहिं तहँ सीतलता न बारि पुनि हानि होती लोचन की !

ज्यों गज काँच बिलोकि सेन जड़, छाँह आपने तन की,

टूटत अ ति आतुर अहार बस, छति बिसारि आनन की !

कहँ लौं कहौं कुचाल कृपानिधि, जानत हो गति जन की,

'तुलसीदास' प्रभु हरहु दुसह दुख, करहु लाज निज पन की !

(7)

यह बिनती रघुबीर गुसाईं

और आस विश्वास भरोसो, हरौ जीव जड़ताई !

चहौं न सुगति सुमति संपत्ति कछु, ऋद्धि-सिधि विपुल बड़ाई,

हेतु रहित अनुराग रामपद, बढ़े अनु दिन अधिकाई !

कुटिल कर्म लै जाहि मोहि जहँ जहँ अपनी बरियाई,

तहँ-तहँ जनि छाँह छाड़ियों, कमठ अंड की नाईं !

या जग में जहँ लग या तनु की, प्रीति प्रतीति सगाई,

ते सब 'तुलसिदास' प्रभु ही सों, होहिं सिमिटि इक ठाईं !

(८)

ममता तू न गयी मेरे मन तें

पाके थाके कर कापन लागे, बल गयो सब इन्द्रिन तें !

श्रवण न वचन सुनत काहू के, ज्योति गयी नैनन तें

टूटे दसन वचन नहिं आवत, शोभा गयी मुखन तें !

कफ़ पित बात कंठ पै बैठे, सुतहि बुलावत कर तें,

भ्रात बन्धु अरु परम पियारे, नारि निकारे घर तें !

जैसे ससि मंडल मेंह कालिख़, छुटै न कोटि जतन तैं,

'तुलसिदास' बलि जाऊँ चरण पै, लोभ पराये धन तै !

(९)

अब लौं नसानी, अब न नसैहौं

राम-कृपा भव-निसा सिरानी

जागे फिर न डसैहौं !

पायेउ नाम चारु चिन्तामणि

उर कर तें न खसैहौं !

स्यामरूप सचि रुचिर कसौटी

चित कंचनहिं कसैहौं !

परबस जानि हँस्यो इन इन्द्रिन

निज बस ह्वै न हँसैहों !

मन-मधुकर प्रन करि 'तुलसी'

रघुपति-पद कमल बसैहों !

(१०)

जाऊँ कहाँ तजि चरन तिहारे

काको नाम पतित पावन जग, केहि अति दीन पियारे !

कौन देव बढ़ि आय विरद हित, हठि-हठि अधम उधारे,

खग,मृग, व्याध, पषान, विटप, जड़, जवन कवन सुर तारे !

देव, दनुज, मुनि, नाग, मनुज, सब माया- बिबस बिचारे,

तिनके हाथ दास 'तुलसी' प्रभु, कहा अपुनापौ हारे !

(११)

कबहुक हौं यहि रहिनि रहौंगो

श्री रघुनाथ कृपा-कृपालु तें संत सुभाव गहौंगो ?

जथा लाभ संतोष सदा, काहू सों कछु न चहौंगो,

परहित निरत निरन्तर मन, क्रम, वचनन तें निबहौंगो,

परुष वचन अति दुसह स्रवन सुनि, तेहि पावक न दहौंगो,

बिगतमान सम सीतल मन, परगुन औगुन न कहौंगो !

परिहरि देह-जनित चिंता, दुःख सुख समबुद्धि सहौंगो,

'तुलसीदास' प्रभु यहि पथ रहि, अविचल हरिभक्ति लहौंगो !

(१२)

भजु मन राम चरन सुखदाई

जेहि चरनन ते निकसी सुरसरि, शंकर जटा समाई,

जटा संकरी नाम परयो है, त्रिभुवन तारन आई !

जिन चरनन की चरन पादुका भारत रह्यो लवलाई,

सोई चरन केवट धोय लीन्हें, तौं हरि-नाव चलाई !

सोई चरन सन्तन जन सेवत, सदा रहत सुखदायी,

सोई चरन गौतम ऋषि नारी, परसि परम पद पाई !

कपि सुग्रीव बन्धु भय-व्याकुल, तिन जय -छत्र पिराई,

रिपु को अनुज विभीषन निसिचर, परसत लंका पाई !

सिव सनकादिक अरु ब्रह्मादिक, सेष सहस मुख गाई,

'तुलसिदास' मारुतिसुत की प्रभु निज मुख करत बड़ाई !

भक्त सूरदास :

(१३)

हे गोविन्द, हे गोपाल, हे गोविन्द राखो शरण
अब तो जीवन हारे !
नीर पीवन हेतु गया, सिन्धु के किनारे,
सिन्धु बीच बसत ग्राह चरन धरि पछारे !
चार प्रहर जुध्द भयो, लै गयो मझधारे,
नाक-कान डूबन लागे, कृष्ण को पुकारे !
द्वारिका में शब्द गयो, शोर भयो भारे,
शंख-चक्र-गदा-पदम्, गरुड़ लै सिधारे !
'सूर' कहै स्याम सुनो शरण हैं तिहारे,
अब की बेर पार करो, नन्द के दुलारे !

(१४)

दीनन दुःख हरण देव सन्तन हितकारी !

अजामिल गीध व्याध, इनमें कहो कौन साध,

पंछी को पद पढात, गणिका सी तारी !

ध्रुव के सिर क्षत्र देत, प्रहलाद को उबार लेत,

भक्त हेतु बांध्यो सेत, लंकपुरी जारी !

तन्दुल देत रीझ जात, सागपात सौं आघात,

गिनत नाहिं जूठे फल, खाटे मीठे खारी !

गज को जब ग्राह्य ग्रस्यो, दुःशासन चीर खस्यो,

सभा बीच कृष्ण कृष्ण द्रोपदी पुकारी !

इतने हरि आय गये, बसनन आरूढ़ भये,

'सूरदास' द्वारे ठाढ़ो आँधरो भिखारी !

(१५)

सुने री मैंने निर्बल के बलराम

पिछली साख भरूँ सन्तन की अड़े सँवारे काम !

जब लग गज बल अपनों बरत्यो नैक सरो नहिं काम,

निर्बल ह्वै बल राम पुकारयो, आये आधे नाम !

द्रुपद-सुता निर्बल भई जा दिन, गह लाये निज धाम,

दुःशासन की भुजा थकित भईं, बसन रूप भये स्याम !

आप-बल, तप-बल और बाहु-बल, चौथा बल है दाम,

'सूर' किशोर कृपा ते सब बल, हारे को हरि नाम !

(१६)

प्रभु मोरे अवगुण चित न धरो

समदरशी है नाम तिहारो, चाहो तो पार करो !

इक नदिया एक नार कहावत मैलोहि नीर भरयो !

जब मिलकर दोउ एक बरन भये सुरसरि नाम परयो !

इक लोहा पूजा मैं राखत, इक घर बधिक परयो,

पारस गुण अवगुण नहिं चितवत, कंचन करत खरो !

यह माया भ्रम जाल कहावत 'सूरदास' सगरो,
अबकी बेर मोहि पार उतारो, नहिं प्रन जात टरो !

(१७)

निसदिन बरसत नयन हमारे

सदा रहत पावस ऋतु हम पर, जब ते स्याम सिधारे !

अंजन थिर न रहत अंखियन में, कर कपोल भये कारे,

कंचुकि पट सूखत नहिं कबहुँ, उर बिच बहत पनारे !

आँसूं सलिल भये पग थाके, बहे जात सित तारे,

'सूरदास' अब डूबत है ब्रज, काहे न लेत उबारे !

(१८)

अब की टेक हमारी, लाज राखो गिरधारी

जैसी लाज रखी अर्जुन की भारत युद्ध मझारी,

सारथि होइके रथ को हाँक्यों, चक्र सुदर्शन धारी !

भगत की टेक न टारी !!

जैसी लाज रखी द्रौपदी की, होन न दीन्हि उघारी,

खैंचत-खैंचत दोउ भुज थाके, दुःशासन पचि हारी !

बढ़ायो चीर मुरारी !!

'सूरदास' की लज्जा राखो, अब को है रखवारी,

राधे-राधे श्रीवर प्यारी, श्री वृषभानु दुलारी !

शरण ताकि आयो तिहारी !!

(१९)

छाडि मन हरि विमुखन को संग

जिनके संग कुमति उपजत है, परत भजन में भंग !

कहा होत पय पान कराये विष नहिं तजत भुजंग,
कागहि कहा कपूर चुगाये, स्वान न्हवाए गंग !
खर को कहा अरगजा लेपन, मरकत भूषन अंग,
गज को कहा न्हवाए सरिता, बहुरि धरै खहि छंग !
पाहन-पतित बांस नहिं बेधत, रीतौ करत निषंग,
'सूरदास' खल कारी कामारि, चढ़त न दूजो रंग !

(२०)

अँखियाँ हरि दरसन की प्यासी
देख्यो चाहत कमल नयन को, निसदिन रहत उदासी !
केसर तिलक, मोतियन की माला, वृन्दावन के वासी,
नेह लगाय छाडि गए तृण सम, डारि गए गल फाँसी !
काहू के मन की कोउ जानत, लोगन के मन हाँसी,
'सूरदास' प्रभु तुम्हरे दरस बिनु, लेहौं करबट कासी !

(२१)

कहा कमी जाके राम धनी ?
मनसा नाथ मनोरथ-पूरन सुख निधान जाकी मौज धनी !
अर्थ धर्म अरु काम मोच्छ फल चार पदारथ देत छनी !
इन्द्र समान हैं जाके सेवक मो बपुरे की कहा गनी !
कहो कृपन की माया कितनी करत फिरत अपनी अपनी !
खाइ न सकै खरच नहिं जानै ज्यों भुजंग सिर र हत मनी !
आनन्द मगन रामगुन गावैं, दुःख संताप की काट तनी !
'सूर' कहत जे भजत राम को तिनसों हरि सों सदा बनी !!

(२२)

अब मैं नाच्यो बहुत गोपाल

काम, क्रोध का पहिर चोलना, कंठ विषय की माल !

महा मोह के नूपुर बाजत, निन्दा सबद रसाल,

भरम भरयो मन भयो पखावज, चलत कुसंगति चाल !

तृष्णा नाद करति घट भीतर, नाना विधि दै ताल,

माया कौ कटि फैंटा बांध्यो, लोभ तिलक दियौ भाल !

कोटिक कला काछि दिखलाई, जल थल सुधि नहिँ काल,

'सूरदास' की सबै अविद्या, दूरि करो नन्दलाल !

(२३)

तुम मेरी राखो लाज हरी

तुम जानत सब अंतरयामी, करनी कछु न करी !

अवगुन मो से बिसरत नाहीं छिन -छिन घरी-घरो ,

सब प्रपंच की पोट बाँधकर अपने सीस धरी !

दारा सुत धन मोह लियो हौ, सुधि बुधि सब बिसरी,

'सूर' पतित को बेगि उबारो, अब मेरी नाव भरी !

(२४)

भजमन रामचरन सुखदाई

जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै, अंधे को सब कुछ दरसाई !

बहिरो सुनै, मूक पुनि बोलै, रंक चले सिर छत्र धराई !

'सूरदास' स्वामी करुणामय, बार बार तेहि पाई !

(२५)

झीनी झीनी झीनी चदरिया

काहे कै ताना, काहे कै भरनी, कौन तार से बीनी च दरिया !

इंगला पिंगला ताना भरनी, सुषमन तार से बीनी चदरिया !

आठ कँबल डल चरखा डोलै, पाँच तत्त गुन बीनी चदरिया !

साईं को सियत मास दस लागे, ठोक ठोक के बीनी चदरिया !

सो चादर सुर नर मुनि ओढ़ी, ओढ़ के मैली कीनी चदरिया !

दास 'कबीर ' जतन से ओढ़ी, ज्यों की त्यों धरि दीनी चदरिया !

(२६)

रस गगन गुफा में अजर झरै

बिन बाजा झंकार उठै जहँ, समुझि परै जब ध्यान धरै !

बिना लाल जँह कमल फुलाने, तेहि चढ़ि हंसा केलि करें !

बिना चंदा उजियारी दरसै, जहँ तहँ हंसा नजर परै !

दसवें द्वारे ताली लागी, अलख पुरख जाको ध्यान धरै !

काल कराल निकट नहिँ आवैं, काम क्रोध मद लोभ जरै !

जुगन जुगन की तृषा बुझाती, करम भरम अध व्याधि टरै !

कहत 'कबीर' सुनो भई साधो, अमर होय, कबहू न मरै !

(२७)

बीत गये दिन भजन बिना रे

बाल अवस्था खेल गवाईं, जब जीवन तब मान घना रे !

काहे कारण जनम लुटायो, अजहुँ न मिटी तृस्ना रे !

कहत 'कबीर' सुनो भई साधो, पार उतर गये सन्त जना रे !

(२८)

भजो रे भैया राम गोविन्द हरी

जप तप साधन कछु नहिँ लागत,खरचत नहिँ गठरी !

संतत संपत सुख के कारण जासे भूल परी !

कहत 'कबीर' जा मुख नहिं राम, बा मुख धुल भरी !

(२९)

माया महा ठगिनि हम जानी

निरगुन फाँस लिये कर डोलै, बोलै मधुरी बानी !

केसव के कमला ह्वै बैठी, शिव के भवन भवानी !

पंडा के मूरत ह्वै बैठी, तीरथ में भई पानी !

जोगी के जोगिन ह्वै बैठी, राजा के घर रानी !

काहू के हीरा ह्वै बैठी, ब्रह्मा के ब्रह्मज्ञानी !

कहत 'कबीर' सुनो हे संतों ! यह इक अकथ कहानी !

(३०)

कौन ठगवा नगरिया लूटन हो

चन्दन काट कै बनत खटोलना, तापर दुल्हन सूतल हो !

उठो री सखी मेरी मांग संवारो, दूल्हा मोसे रूठल हो !

आय यमराज पलंग चढ़ि बैठे, नैनन अंसुवा टूटल हो !

चार जने मीलि खाट उठाइल, चहुँ दिसि धू-धू ऊठल हो !

कहत 'कबीर' सुनो भई साधो, जग से नाता टूटल हो !

(३१)

घूँघट के पट खोल रे ! तोहे राम मिलेंगे

घट-घट में वह साईं रमता, कटुक वचन मत बोल रे !

धन-जोबन का गरब न कीजे, झूठा पचरंग चोल रे !

सुन्न महल में दियना बारि ले, आसन से मत डोल रे !

जात जुगत सो रंग महल में, पिया पाया अनमोल रे !

कहै 'कबीर' आनन्द भयो है, बाजत अनहद ढोल रे !

(३२)

रहना नहि देस बिराना है

यह संसार कागद की पुड़िया, बूँद पड़े धुल जाना है !

यह संसार कांट की बाड़ी, उलझ पुलझ मरि जाना है !

यह संसार झाड़ औ झाँखर, आग लगे बरि जाना है !

कहत 'कबीर' सुनो भाई साधो, सतगुरु नाम ठिकाना है !

(३३)

साधो, सहज समाधि भली

गुरु प्रताप जा दिन सों जागी, दिन दिन अधिक चली !

जहँ जहँ डोलौं सो परिकरमा, जो कछु करौं सो सेवा,

जब सोवों तब करौं दंडवत, पूजौं और न देवा !

कहौं सो नाम, सुनौं सो सुमिरन, खावौँ-पियौं सो पूजा,
गिरह-उजाड़ एकसम लेखौं, भाव मिटावों दूजा !
आँख न मूँदो, कान न रूँधौं, तनिक कष्ट नहिं धारौं,
खुले नैन पहिचानौं हँसि-हँसि, सुन्दर रूप निहारौं !
सबद निरन्तर से मन लागा, मलिन वासना त्यागी,
बैठत -उठत कबहुँ नहिं छूटै, ऐसी तारी लागी !
कहै 'कबीर' यह उनमनि रहनी, सो परगट करि गाई,
दुःख-सुख से कोई परे परमपद, तेहि पद रहा समाई !

(३४)

तोरी गठरी में लागे चोर
बटोहिया का सोवै ?
पाँच पचीस तीन हैं चुरवा
यह सब कीन्हा सोर,
जाग सबेरा बाट अनेरा
फिर नहिँ लागै जोर !
भवसागर इक नदी गहन है
बिन उतरे जाहु बोर,
कहै 'कबीर' सुनो भाई साधो
जागत कीजै भोर !

(३५)

चलना है, दूर मुसाफ़िर, काहे सोवै रे
चेत अचेत नर, सोच बावरे, बहुत मत सोवै रे !
काम, क्रोध, मद, लोभ में फंसकर, उमरिया काहे खौवै रे !
सिर पर माया मोह की गठरी, संग दूत तेरे होवै रे !
सो गठरी तेरी बीच में छिनी गयी, मूँड पकरि कहा रोवै रे !
रस्ता तौ वह दूर बिकट है, तजि चलव अकेला होवै रे !
संग-साथ तेरे कोई न चलेगा, का कै डगरिया जोवै रे !
नदिया गहरी नाव पुरानी, कही विधि पार तू होवै रे !
कहै 'कबीर' सुनो भई साधो,ब्याज धोखे मूल मत खौवै रे !

(३६)

भजन बिन बावरे तैने हीरा सो जनम गँवायो
कभी न आयौ सन्त सरन में, न हरिगुन गायो,
बढ़-बढ़ मरौ बैल कीं नाईं, सोया रहयो उठि खायो !
यो संसार हाट बनिये की, सब जग सौदा लायो,
चतुर माल चौगुना कीन्हों, मूरख मूल गँवायो !
यो संसार फूल सेमर का, सूआ देख लुभायो,
मारी चौंच रुई निकसाई, मूंडी धुनि पछितायो !
यो संसार माया कौ लोभी, ममता महल चिनायो,
कहत 'कबीर' सुनो भई संतों, हाथ कछु नहिँ आयो !

गुरु नानकदेव

(३७)

ठाकुर तुम सरनाई आयो,

उतर गया मेरे मन का संसा,

जब तेरो दरसन पायो !

अनबोलत ही व्यथा मेरी जानी,

अपना नाम जपायो !

दुःख नास्यो सुख सहज समायो,

आनन्द में गुण गायो !

बांह पकड़ मेरी निज जन जानी,

गुरु अंधियार मिटायो !

कहैं ' नानक' गुरु बंधन काटे,

बिछुरत आन मिलायो !

(३८)

गाइये गुन गोपाल कृपानिधि

दुःख बिदारन सुखदाता सतगुर , जिकउ भेंटत होय सकल सिधि !

सिमरत नाम मनहिं साधा रे, कोटि अपराधी खिन माहि तारे !

जाके चित्त आवै गुर अपना, ताके दुःख नहीं तिल सपना !

जाको सतगुर अपना राखै, सो जन हरि रस रसना चाखै !

कहु 'नानक' गुर कीनी मइया, हलत- पलत मुख ऊजल भया !

(३९)

प्रीतम जान लैव मन मांही

अपने सुख में सब जग फँस्यो, कोऊ काहू का नाहीं !

सुख में आन बहुत मिल बैठत, रहत चहूँ दिस घेरे,

विपत पड़े सब ही संग छाँडत, कोई न आवत नेरे !

घर की नार बहुत हित जासे, रहत सदा संग लागी,

जब यह हंस तजिहै काया, प्रेत प्रेत कर भागी !

या विधि को व्यवहार बन्यो है, तासो नेह लगायो,

अन्त बार 'नानक' बिन सतगुरु, कोऊ काम न आयो !

(४०)

राम सिमर, राम सिमर, ऐहैं तेरे काज है

माया को संग त्याग, प्रभुजू की सरन लाग,

जगत सुख मान मिथ्या, झूँठौ सब साज है !

सुपने ज्यों धन पिछान कर, काहे पर करत मान,

बालू की भीत तैसे, बसुधा को राज है !

'नानक' जन कहत बात, बिनसि जैहै तेरो गात,

छिन छिन करि गयो काल्ह, जैसे जात आज है !

(४१)

जगत में झूंठी देखी प्रीत

अपने ही सुख सौं सब लागे, क्या दारा क्या मीत !

मेरौ मेरौ सभी कहत हैं, हित सों बांध्यो चीत !

अन्त काल संगी नहिं कोऊ, यह अचरज की रीत,

मन मूरख अजहुँ नहीं समुझत, सिख दै हारयो नीत !

'नानक' भव-जल-पार परै जो, गावै प्रभु के गीत !

(४२)

जिह्वा, एक कवन गुन कहिये
बेसुमार बेअंत सुआमी, तेरो अंत न किनही लहिये !
तुम दाते ठाकर प्रतिपालक, नायक खसम हमारे !
निमख निमख तुमही प्रतिपालहु, हम बारिक तुमरे धारे !
कोटि अपराध हमारे खंडहु, अनिक बिधी समझावहु !
हम अग्यान अल्प मति थोरी तुम आपन विरद रेखावहु !
तुमरी सरन तुम्हारी आसा, तुम ही सजन सुहेले !
राखहु राखनहार दयाला, 'नानक' घर के गीले !

(४३)

सुमरन कर ले मेरे मना
तेरी बीति उमर, हरि नाम बिना !
कूप नीर बिनु, धन क्षीर बिनु, धरती मेह बिना,
जैसे तरुवर फल बिन हीना, तैसे प्राणी हरिनाम बिना !
देह नैन बिन, चन्द रैन बिन, मन्दिर दीप बिना,
जैसे पंडित वेद विहीना, तैसे प्राणी हरिनाम बिना !
काम क्रोध मद लोभ निहारो, छाड दे संतजना,
कहे 'नानकशाह' सुन भगवंता, या जग में नहिं कोई अपना !

नाम जपन क्यों छोड़ दिया ?
क्रोध न छोड़ा, झूठ न छोड़ा,
सत्य वचन क्यों छोड़ दिया ?
झूठे जग में दिल ललचा कर,
असल वतन क्यों छोड़ दिया ?
कौड़ी को तो ख़ूब संभाला,
लाल रतन क्यों छोड़ दिया ?
जिहि सुमिरन ते अति सुख पावे,
सो सुमिरन क्यों छोड़ दिया ?
खालस इक भगवान भरोसे,
तन, मन, धन क्यों छोड़ दिया ?

(४५)

सरनी आयो निधान !
नाम प्रीत लागी मन भीतर,
मांगन को हर दान !
सुखदाई पूरन परमेसर,
कर किरपा राखो मान !
देह प्रीत साधू संग स्वामी,
हर गुन रसन बखान !
गोपाल दयाल गोविन्द दामोदर,
निरमल कथा गियान !
'नानक ' को हर के रंग रागो,
चरन कमल संग ध्यान !

(४६)

हरि बिनु तेरो कौन सहाई ?

काके मात पिता सुत बनिता, को काहू को भाई !

धन धरती अरु सम्पति सगरी, जो मान्यो अपनाई,

तन छूटै कछु संग न चालै, जाहि रहा लपटाई !

दीन दयाल सदा सुख भंजन, तासों रूचि न बढ़ाई,

'नानक' कहे जगत सब मिथ्या, ज्यों सपना रैनाई !

(४७)

मुरसिद मेरा मरहमी, जिन भरम बताया,

दिल अंदर दीदार जिन खोजा तिन पाया !

तसबीह एक अजूब है, जामें हरदम दाना,

कुंज किनारे बैठिके, फेरा तिन्ह जाना !

क्या बकरी क्या गाय है, क्या अपनो जाया,

सबको लौहू एक है, साहिब फ़रमाया !

पीर पैगम्बर औलिया, सब मरने आया,

नाहक जीव न मारिये, पोषन को काया !

हिरिस हिये हैवान है, बस करिलै भाई,

दाद इलाही 'नानका' जिसे देय खुदाई !

(४८)

रे मन यह साँची जिय धार

सगल जगत है जैसे सुपना, बिन सत लगै न वार !

बालू भीत बनाई रच-रच, रहत नहीं दिन चार,

तैसे ही यह सुख माया को, उरझो कहाँ गंवार !

अजहूँ समझ कछु बिगडो नाहिन, भजले गुरु करतार,
कहें 'नानक' निजमत साधन को, भाख्यो तोहि पुकार !

मीरा बाई

(४९)

मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरा न कोई,
दूसरा न कोई, साधो सकल लोक जोई !
भाई छोड्या, बंधु छोड्या, छोड्या सगा सोई,
साधुन संग बैठ बैठ, लोक लाज खोई !
भगत देख राजी हुई, जगत देख रोई,
अंसुवन जल सींच सींच प्रेम- बेलि बोई !
दधि मथ घृत काढ़ि लियो, डार दियो छोई,
राणा विष को प्यालो भेज्यो, पीवत मगन होई !
अब तो बात फैल गयी, जाणे सब कोई,
'मीरा' प्रेम लगण लागी, होनी होय सो होई !

(५०)

राम नाम रस पीजै मनुआ, राम नाम रस पीजै !
तज कुसंग सत-संग बैठ नित, हरि चरचा सुनि लीजै !
काम, क्रोध, मद, लोभ मोह कूँ, बहाय चित्त सों दीजै !
'मीरा' के प्रभु गिरधर नागर, ताहि के रंग भीजै !

(५१)

दरस बिन दूखन लागे नैन

जबते तुम बिछुड़े प्रभु मोरे, कबहुँ न पायो चैन !

सबद सुनत मेरी छतियाँ काँपें, मीठे लागैं बैन !

विरह कथा कासूं कहूँ सजनी, बह गयी करबत ऐन !

कल न परत पल हरि, मग जोहत भई छमासी रैन !

'मीरा' के प्रभु कब रे मिलोगे, दुःख मेंटन सुख दैन !

(५२)

राम मिलन के काज, सखी

राम मिलन के काज सखी, मेरे आरती मन में जागी रे !

तरपत तरपत कल न परत है, विरह वाण उर लागी रे !

निसदिन पंथ निहारूँ पिव को, पलक न पल भर लागी रे !

पीव-पीव मैं रटूँ रात-दिन, दूजी सुध बुध भागी रे !

विरह भुजंग मेरो डस्यो कलेजो, लहर हलाहल जागी रे !

मेरी आरति मेटि गुसाईं, आन मिलौ मोहि सागी रे !

'मीरा' व्याकुल अति अकुलाणी, पिया की उमंग है लागी रे !

(५३)

मोरी लागी लटक गुरु चरनन की

चरन बिना मोहे कछु न भावे,

जग माया सब सपनन की !

भव सागर सब सूख गयो है,

फ़िकर नहीं मोहे तरनन की !

'मीरा' कहे प्रभु गिरधर नागर,

आस बही गुरु सरनन की !

(५४)

म्हाँने चाकर राखो जी

हे गिरधर लाला ! म्हाँने चाकर राखो जी !

चाकर रहसूँ, बाग लगासूँ, नित उठ दरसन पासूँ !

वृन्दावन की कुंज गलिन में, गोविन्द लीला गासूँ !

चाकरिया में दरसन पाऊँ, सुमिरन पाऊँ खरची !

भाव-भगति जागीरी पाऊँ, तीनों बातां सरसी !

मोर मुकुट, पीताम्बर सोहे, गल बैजयन्तीमाला !

वृन्दावन में धेनु चरावे, मोहन मुरली वाला !

ऊँचे-ऊँचे महल बनाऊँ, बिच-बिच राखूँ बारी !

सांवरिया के दरसन पाऊँ, पहिर कुसुम्बी सारी !

जोगी आया जोग करनकूं, तप करने सन्यासी !

हरी भजनकूँ साधू आये, वृन्दावन के वासी !

'मीरा' के प्रभु गहिर गम्भीरा, ह्रदे रहो जी धीरा !

आधी रात प्रभु दरसन दीन्हों, जमुनाजी के तीरा !

(५५)

तुम सुणो दयाल म्हारी अरजी

भव सागर में बही जात हूँ, काढ़ो तो थारी म रजी !

इयाँ संसार सगा नहीं कोई, साँचि सगा रघुवर जी !

मात पिता और कुटुम कबीलो, सब मतलब के गरजी !

'मीरा' की प्रभु अरजी सुण लो, चरण लाओ थारी मरजी !

(५६)

म्हारे जन्म-मरण रो साथी, थांने नहिं बिसरुं दिन राती,
थां देख्याँ बिन काल न पडत है, जाणत मेरी छाती,
ऊँची चढ़-चढ़ पंथ निहारूँ, रोय-रोय अखियाँ राती !
यों संसार सकल जग झूठो, झूठा कुलरा न्याती,
दोउ कर जोड़्यां अरज करूँ छू,सुण लीजो मेरी बाती !
यो मन मेरो बड़ो हरामी, ज्यूँ मदमातो हाथी,
सतगुरु हाथ धरयो सिर ऊपर, आँकुस दै समझाती !
पल-पल पिवकौ रूप निहारूँ, निरख-निरख सुख पाती,
'मीरा' के प्रभु गिरधर नागर, हरि चरणां चित राती !

(५७)

पग घुँघरू बाँध मीरा नाची रे !
मैं तो मेरे नारायण की, आपहि हो गई दासी रे !
लोग कहैं मीरा भई बाबरी, न्यात कहैं कुलनासी रे !
बिस का प्याला राणा जी भेज्या, पीवत मीरा हांसी रे !
'मीरा' के प्रभु गिरधर नागर, सहज मिले अविनासी रे !

(५८)

माई री मैं तो लियो गोविंदा मोल
कोई कहै छाने,कोई कहै चुपके, मैंने लियो बजंता ढोल !
कोई कहै मंहगो, कोई कहै सस्तो, मैंने लियो री तराजू तोल !
कोई कहै कालो, कोई कोई कहै गोरो, लियो री अमोलक मोल !
कोई कहै घरमैं, कोई कहै बनमें, राधा के संग किलोल !
'मीरा' के प्रभु गिरधर नागर, आवत प्रेम के मोल

(५९)

बसो मोरे नैनन में नन्दलाल

मोहिनी मूरति साँवरि सूरति, नैणा बने बिसाल !

अधर-सुधारस मुरली राजत, उर बैजन्ती माल !

छुद्र-घंटिका कटि तट सोभित, नूपुर सबद रसाल !

'मीरा' प्रभु संतन सुखदाई, भगत-बछल गोपाल !

(६०)

राणा जी, मैं तो गोविन्द के गुण गासूँ

राजा रूठे नगरी राखे, हरि रूठ्या कित जासूँ !

हरि मन्दिर में निरत करासूँ, घूंघरिया छमकासूँ !

राम नाम का जाप चलासूँ, भवसागर तरजासूँ !

यह संसार बाढ़ का काँटा, जिया संगत नहीँ जासूँ !

'मीरा' के प्रभु गिरधर नागर, नित उठ दरसन पासूँ !

****

आगे निम्नलिखित कवियों की **6-6** रचनायें हैं –

भक्त रैदास, दादू दयाल, गुरु तेग बहादुर, सहजो बाई , ब्रह्मानन्द एवं पलटूदास

भक्त रैदास

(६१)

अब कैसे छूटै नाम रट लागी

प्रभुजी, तुम चन्दन हम पानी

जाकी अंग अंग बास समानी !

प्रभुजी, तुम घन , हम बन मोरा

जैसे चितवत चंद चकोरा !

प्रभुजी, तुम दीपक हम बाती

जाकी जोत जरै दिन राती !

प्रभुजी, तुम मोती हम धागा

जैसे सोनहिं मिलत सुहागा !

प्रभुजी, तुम स्वामी हम दासा

ऐसी भगति करै 'रैदासा' !

(६२)

जो तुम तोरो राम, मैं नाहिं तोरूँ,

तुमसौं तोरि कवन संग जोरूँ !

तीरथ बरत न करौ अंदेसा,

तुम्हरे चरन कमल का भरोसा !

जहँ जहँ जाऔं तुम्हारी पूजा,

तुमसौं देव और नहिं दूजा !

मैं अपने मन हरिसौं जोरयो,

हरिसौं जोरि सबन ते तोरयों !

सबही पहर तुम्हारी आसा,

मन क्रम वचन कहै 'रैदासा ' !

सो कहा जानै पीर पराई
जाके दिल में दरद न आई !
दुखी दुहागिनि होई पियहीना,
नेह निरत करि सेव न कीना !
स्याम प्रेम का पंथ धुहेला,
चलन अकेला कोई संग न हेला !
सुख की सार सुहागिनि जानै,
तन-मन देय अंतर नहिं आनै !
आन सुनाय और नहिं भाखै,
राम रसायन रसना चाखै !
खालिक तौ दरमंद जगाया,
बहुत उमेद जबाब न पाया !
कह 'रैदास' कवन गति मेरी,
सेवा बंदगी न जानूँ तेरी !

(६४)

राम बिन संसय गाँठि न टूटे
काम किरोध लोभ मद माया, इन पंचन मिल लूटै !
हम बड़ कवि कुलीन, हम पंडित, हम जोगी सन्यासी,
ज्ञानी गुनी सूर हम दाता, याहु कहे मति नासी !
पढ़े गुने कछु समुझि न परई, ज्यौं लौं भाव न दरसै,
लोहा कनक होइ धौं कैसे, जौं पारस नहिं परसै !
कह 'रैदास' और असमुझ सी, चालि परै भ्रम भोरे,
एक आधार नाम नर हरि को, जिवन प्रान धन मोरे !

(६५)

राम, मैं पूजा कहाँ चढ़ाऊँ
फल अरु फूल अनूप न पाऊँ!
थन तर दूध जो बछरू जुठारी,
पुहुप भंवर जल मीन बिगारी!
मलयागिरि बेधिया भुजंगा,
विष अमृत दोउ ऐके संगा!
मन ही पूजा मन ही धूप,
मन ही सेऊ सहज सरूप !
पूजा अरचा न जानूँ तेरी,
कह 'रैदास' कवन गति मेरी !

(६६)

जब राम नाम कहि गावैगा,
तब भेद अभेद समावैगा!
जो सुख है या रसके परसे,
सो सुख का कहि गावैगा!
गुरु परसाद भई अनुभौ मति,
बिस अमरित सम धावैगा !
कह 'रैदास' मेटि आप-पर,
तब बा ठौरहिं पावैगा !

तू सांचा साहिब मेरा
करम कबीर कृपाल निहारौ, मैं जन बंदा तेरा!
तुम दीवान सबहित की जानों, दीनानाथ दयाला!
दे दीदार मौज बन्दे कूँ, काइम करों निहाला!
मालिक सबै मलिक के साईं, समरथ सिरजनहारा!
खैर खुदाई खलक में खेलत, दे दीदार तुम्हारा!
मैं दरगाह सिकस्ता तेरी, हरि हज़ूर तूँ कहिये!
'दादू' द्वारे दीन पुकारै, काहे न दरसन लहिये!

(६८)

अहो नर नीका है हरिनाम
दूजा नहीं नाऊँ बिन नीका, कहिले केवल राम!
निरमल सदा एक अबिनासी, अजर अकल रस ऐसा!
दृढ गहि राखि मूल मन माँहीं, निरख देखि निज कैसा!
यह रस मीठा महा अमीरस, अमर अनूपम पीवै!
राता रहै प्रेमसूँ माता, ऐसैं जुगि जुगि जीवै!
दूजा नहीं और को ऐसा, गुर अंजन करि बूझै!

(६९)

मेरे मन भैया राम कहौ रे
रामनाम मोहिं सहज सुनावै, उनहिं चरन मन कीन रहौ रे!
रामनाम ले संत सुहावै, कोई कहै सब सीस सहौ रे!
वाही से मन जोरे राखौ, नीकै रासि लिये निबाहौ रे!
कहत सुनत तेरौ कछु न जावै, पाप निछेदन सोई लहौ रे!
'दादू' जन हरि के गुण गाओ, कालहिं जालहिं फेर दहौ रे!

(७०)

नूर रह्या भरपूर, अमीरस पीजिये
रस मोहैं रस होइ, लाहा लीजिये !
परगट तेज अनंत, पार नहीं पाइये !
झिलमिल झिलमिल होइ, तहाँ मन लाइये !
सहजैं सदा प्रकास, ज्योति जल पूरिया !
तहाँ रहै निज दास, सेवक सूरिया !
सुख-सागर वार न पार, हमारा बास है !
हंस रहैं ता माही, 'दादू' दास है !

(७१)

क्यों बिसरै मेरा पीव पियारा,
जीवै कौं जीवन प्राण हमारा !
क्योंकर जीवैं मीन जल बिछुरे,
तुम बिन प्राण सनेही !
चिंतामणि जब करतै छूटै,
तब दुःख पावै देही !

माता बालक दूध न देवै,
सो कैसे करि जीवै !
निरधन का धन अनत भुलाना,
सो कैसे करि जीवै !
बरखहु राम सदा सुख अमरित,
नीझर निरमल धारा !
प्रेम पियाला भर-भर दीजै,
'दादू' दास तिहारा !

(७२)

तू तो है गुरुदेव हमारा,
सब कुछ मेरे नाम तुम्हारा !
तुम ही पूजा, तुम ही सेवा,
तुम ही सद्गुरु मेरे देवा !
जोग जग्य तुम साधन जापा,
तुम ही मेरे आपै आपा !
तप तीरथ तुम व्रत अस्नाना,
तुम ही ज्ञाना तुम ही ध्याना !
वेद भेद तुम पाठ पुराना,
'दादू' कहँ तुम पिंड छुड़ाना !

(७३)

जो नर दुःख में दुःख नहिं मानै
सुख सनेह अरु भय नहिं जाके, कंचन माटी मानै !
नहिं विद्या नहिं उस्तति जाके, लोभ-मोह अभिमाना !
हरष सोक ते रहै नियारो, नाहिं मान -अपमाना !
आसा-मनसा सगल त्याग के, जगते रहै निरासा !
काम क्रोध जेहि परसै नाहिन, तेह घट ब्रह्म निवासा !
गुर किरपा जे नर को कीन्ही, ते एह जुगत पिछानी !
'नानक' लीन भयो गोविन्द स्यों, ज्यों पानी संग पानी !

(७४)

काहे रे बन खोजन जाई ?
सर्व निवासी सदा अलेपा, तो ही संग समाई !
पुहुप मध्य ज्यों बास बसत है, मुकुर मांहि जस छाईं !
तैसे ही हरि बसै निरन्तर, घट ही खोजो भाई !
बाहर भीतर एको जानहु, एह गुरु ज्ञान बताई !
जन 'नानक' बिन आपा चीन्हें, मिटै न भ्रम की काई !

(७५)

बिसर गयी सब तात पराई, जबते साध संगत मोहि पाई !
ना कोई बैरी, नाहिं बिगाना, सगल संग हमको बन आई !
जो प्रभु कीन्हों सो भल मान्यो, एह सुमत साधुन ते पाई !
सब मँह रम रहिया प्रभु एकै, पेख-पेख 'नानक' बिगसाई !

(७६)

साधो मन का मान त्यागो

काम क्रोध संगत दुर्जन की, ता ते अहनिस भागो !

सुख दुःख दोनों सम करि जानै, और मान अपमाना !

हरष सोक ते रहै अतीता, तिन जग तत्व पिछाना !

अस्तुति निन्दा दोऊ त्यागै, खोजै पद निरवाना !

जन 'नानक' यह खेल कठिन है, कोऊ गुरु-मुख जाना !

(७७)

अब मैं कवन उपाव करौं

जेहि विधि मनका संसा छूटै, भव-निधि पार करौ !

जनम पाय कछु भलौ न कीन्हों, तातें अधिक डरौं !

गुरुमत सुन कछु ज्ञान न उपजौ, पसुवत उदर भरौ !

कह 'नानक' प्रभु विरद पिछानौ, तब हौं पतित तरौं !

(७८)

चित्त चरन-कमल का आसरा

चित्त चरन कमल संग जोड़ियै !

मन लोचै बुरआइयां,

गुर दीजै बाँह न छोड़ियै !

बाहें जिन्हा दी पकड़िये,

सिर दीजै बाँह न छोड़ियै !

गुर तेग बहादुर बोलया,

घर पईयै धरम न छोड़ियै !

(७९)

गुरु हमरे प्रेम पियायौ हो
ता दिन तें पलटो भयौ, कुल गोत नसायौ हो!
अलम चढो गगने लगौ, अनहद मन छायों हो!
तेज पुंज की सेजपै, प्रीतम गल लायौ हो!
गये दीवाने देसड़े, आनन्द दरसायौ हो!
सब किरिया सहजै छुटी, तप नेम भुलायौ हो!
त्रिगुणतें ऊपर रहौं, सुकदेव बसायौ हो!
'चरनदास' दिन रैन नहिं, तुरिया पद पायौ हो!

(८०)

जिन्हें हरिभगति पियारी हो
माता-पिता सहजै छूटैं, छूटैं सुत अरु नारी हो!
लोकभोग फीके लगैं, सम अस्तुति गारी हो!
हानि लाभ नहिं चाहिये, सब आसा हारी हो!
जगसूँ मुख मोरे रहैँ, करैं ध्यान मुरारी हो!
जित मनुवां लागो रहै, भइ घट उजियारी हो!
गुरु सुकदेव बताइया, प्रेमी गति भारी हो!
'चरनदास. चारौं बेदसूँ, औरै कछु न्यारी हो!

(८१)

पीले प्याला, होजा मतवाला, प्याला प्रेम हरी रस का रे!
पाप पुण्य तू भोगन आया, कौन तेरा है तू किसका रे!
जो दम है बन्दे हरि भजले, जीवन है सपना निशि का रे!

बालपन हँस हँस खेल गँवायो , तरुण भया नारी फँसता रे !
वृद्ध भयो कफ बाय ने घेरा, खाट पड़ा नहिं कुछ बसका रे !
नाभि कमल में है कस्तूरी, कैसे भ्रम जावे पशु का रे !
बिन सतगुरु ऐसे दुःख पावे, जैसे मृग भटके वन का रे !
लख चौरासी उबरा चाहे, छोड़ै नारी का चसका रे !
चरनदास सुखदेव कहत हैं, क्यों नखसिख में जहर भरा रे !

(८२)

टुक रंगमहल में आव कि निरगुन सेज बिछी,
जहँ पवन गवन नहिं होय जहाँ जा सुरसा बसी !
जहँ त्रैगुन बिन निरबान जहाँ नहिं सूर-ससी,
जहँ हिल-मिलकै सुख मान मुकति की होय हँसी !
जहँ पिय-प्यारी, मिलि एक कि आसा दुई नसीं !
जहँ 'चरनदास' गलतान कि सोभा अधिक लसी !

(८३)

प्रेमनगर के माहिं चलौ सखि, होरी होय रही,
जब सौं खेली हमहूँ चित दै, आपनहूँ को खोय रही !
बहुतन कुल अरु लाज गँवाई, रहौ न कोई काम !
नाचि उठैं, कभी गावन लागैं, भूले तन-धन-धाम !
बहुतन की मति रँग रँगी है, जिनकौ लागौं प्रेम !
बहुतन को अपनी सुधि नाहीं , कौन करे अस नेम !
बहुतन की गदगद ही बानी, नैनन नीर ढराय !
बहुतन को बौरापन लागो, ह्वान्की कही न जाय !
प्रेमी की गति प्रेमी जानै, जाकै लागी होय !
चरनदास उस नेहनगर की, सुकदेवा कहि सोय !

(८४)

झूलत कोइ कोइ संत लगन हिंडोलने
पौन उमाह उछाह धरती सोच सावन मास,
लाजके जहँ उड़त बगुले मोर हैं जग हांस !
हरष-सोक दोउ खंभ रोप सूरत डोरी लाय,
बिरह पटरी बैठि सजनी उमँगि आवै जाय !
नैन बादल उमंगि बरसै दामिनी दमकात,
बुद्धि को ठहराव नाहीं नेह की नहिं जात !
सुकदेव कहैं, कोई बलि झूले, सीस देत अकोर !
'चरनदासा' भये बौरे जाती-बरन कुल छोर !

सहजोबाई

(८५)

तेरी गति किनहूँ न जानी हो
ब्रह्मा सेस महेसुर थाके, चारो बानी हो !
बाद करंते सब मत थाके, बुद्धि थकानी हो !
विद्या पढ़ि-पढ़ि पंडित थाके, ब्रह्मगियानी हो !
सबके परे जुअन मम हारी, थाह न जानी हो !
छान बीनकर बहुतक थाकी, भई खिसानी हो !
सुर नर-मुनी गनपती थाके, बड़े बिनानी हो !
'चरनदास' थकी 'सहजो बाई' भई सिरानी हो !

(८६)

भया हरि-रस पी मतवारा
आठ पहर झूमत ही बीतै, डार दिया सब भारा !

इड़ा पिंगला ऊपर पहुंचे, सुखमन पाट उघारा!
पीवन लगे सुधारस जबहीं, दुर्जन पडी बिडारा!
गंग जमन बिच आसन मारयो, चमक-चमक चमकारा!
भॅवर गुफा में दृढ ह्वै बैठे, देख्यो अधिक उजारा!
चितई स्थिर चंचल मन थाका, पाँचौ का बल हारा!
चरनदास किरपासू 'सहजो' भरम करम हुए छारा!

(८७)

साधो सहज समाधि भली
गुरु प्रताप जा दिन से जागी
दिन दिन अधिक चली!
जहँ जहँ डोलौं सो परिकरमा,
जो कुछ करौं सो सेवा!
जब सोवौं तब करों दण्डवत,
पूजौं और न देवा!
कहौं सो नाम, सुनौं सो सुमिरन,
खाऊँ पियूँ सो पूजा!

(८८)

हमारे गुरु पूरन दातार
अभय दान दीनन को दीन्हें, कीन्हें भव-जल पार!
जनम-जनम के बंधन काटे, यम को बांध निवार!
रंक हुते सो राजा कीन्हें, हरि-धन दियो अपार!
देवें ज्ञान भगति पुनि देवैं, योग बतावनहार!
तन-मन बचन सकल सुखदाई, हिरदे बुधि उँजियार!

सब दुःख गंजन पातक भंजन, रंजन ध्यान बिचार !
सज्जन दुर्जन जो चलि आवै, एकहि दृष्टि निहार !
आनंदरूप स्वरूपमई है, लिप्त नहीं संसार !
चरनदास गुरु 'सहजो' केरे, नमो-नमो हर बार !

(८९)

हमारे गुरु बचनन की टेक
आन धरमकूँ नाहीं जानूँ, जापू हरि -हरि एक !
गुरु बिना नहीं पार उतरिहैं, धरकै नाना भेख !
रमौ तीरथहिं बर्तहू राखौं, होहू पंडित-सेख !
गुरु बिना नहिं ज्ञान-दीपला, जाये नहिं अंधियार !
काम क्रोध मद लोभ सबै मँह, उलझि गया संसार !
चरनदास गुरु किरपा करकै, दीन्यौ मंतर कान !
'सहजो' घट परगास है गयौ, गयौ सब अज्ञान !

(९०)

अब तुम अपनी ओर निहारो
हमरे अवगुन पै नहिं जाओ, तुमहीं अपना विरद सम्हारो !
जुग जुग साख तुम्हारी ऐसी, वेद पुरानन गाई !
पतित उधारन नाम तुम्हारो, यहि सुनके मन दृढ़ता आई !
मैं अजान, तुम सब कुछ जानो, घट-घट अंतरजामी !
मैं तो चरन तुम्हारे लागी, हो किरपाल दयालहि स्वामी !
हाथ जोरिकै अरज करत हौं, अपनाओ गहि बाँहीं !
द्वार तिहारे आय परी हौं, पौरुष गुन मोमें कछु नाहीं !

(९१)

हरिनाम सुमर सुखधाम, जगत में जिवना दो दिन का!
सुन्दर काया देख लुभाया, गरब करै तन का!
गिर गई देह बिखर गयी काया, ज्यूँ माला-मनका!
सुन्दर नारी लगै पियारी, मौज करै मन का!
काल बली का लग्या तमंचा, भूल जाय ठन का!
झूठ कपट कर माया जोड़ी, गरब करै धन का!
सबहि छोड़कर चल्या मुसाफिर, बास हुआ बन का!
यो संसार स्वप्न की माया, मेला पल छिन का!
'ब्रह्मानन्द' भजन कर बन्दे, नाथ निरंजन का!

(९२)

नाम लिया हरि का जिसने
तिन और का नाम लिया न लिया

जड़ चेतन सब जगजीवन को, घट में अपने सम जान सदा,
सबका प्रतिपालन नित्य किया, तिन विप्रन दान दिया न दिया!
काम किये परमारथ के, तन से, मन से, धन से करके!
जग अन्दर कीरति छाय रही, दिन च्यार बिसेस जिया न जिया!
जिसके घर में हरि की चर्चा, नित होवत है दिन रात सदा!
सतसंग कथामृत पान किया, तिन तीरथ नीर पिया न पिया!
गुरु के उपदेस समागम से, जिनने अपने घट भीतर में!
'ब्रह्मानन्द' रूप को जान लिया, तिन साधन योग किया न किया!

(९३)

बाहर ढूढ़न जा मत सजनी
पिया घर बीच बिराज रहे री!
गगन मंडल में सेज बिछी है
अनहद बाजे बाज रहे री!
अमृत बरसे बिजली चमके
उमड़ घुमड़ घन गाज रहे री!
परम मनोहर रूप पिया को
रवि ससि मंडल लाज रहे री!
'ब्रह्मानन्द' निरख छवि सुन्दर
आनन्द मंगल साज रहे री!

(९४)

आज सखी सतगुरु घर आये
मेरे मन आनन्द भयो री!
दर्शन से सब पाप विनाशे
दुःख दारिद्र सब दूर गयो री!
अमृत वचन सुनत भ्रम नाश्यो
घट भीतर प्रभु पाय लियो री!
जनम जनम के संशय छूटे
भव भय ताप मिटाय दियो री!
'ब्रह्मानन्द' दास दासन को
चरण कमल लिपटाय रह्यो री!

(९५)

पिया के मनभावन की बतियाँ

अरी ओ री सखी बतलादे मुझे, पिया के मनभावन की बतियाँ !

पिया अन्दर महल बिराज रहे, घर काजन में अटकाय रही,

नहिं एक घड़ी संग रही, बिरथा सब बीत गईं रतियाँ !

पिया सोवत ऊँची अटरिन में, जहाँ जीव परंद की गम्य नहीं,

जिस मारग होय के जाय मिलूँ, किस भांति बनाय लिखूँ पतियाँ !

गुनहीन मलीन सरीर मेरा, कुछ हार सिंगार किया भी नहीं,

नहिं जानूँ मैं प्रेम की बात कोई, मेरी काँपत हैं डर से छतियाँ !

मिल जाय सजन, चढ़ जाऊँ गगन, पिया प्रेम सिंधु में डूब रही,

'ब्रह्मानन्द' कैसे पग बढ़ाऊँ, सिखलादे चलने की विधियाँ !

(९६)

ऐसी करी गुरुदेव दया, मेरा मोह का बंधन तोड़ दिया

दौड़ रहा दिन रात सदा, जग के सब काज विहारन में,

सपने सम विश्व लखाय मुझे, मेरे चंचल चित्त को मोड़ दिया !

कोई शेष महेश गनेश रटे, कोई पूजत पीर पैगम्बर को,

सब पंथ गिरंथ छुड़ा करके, इक ईश्वर में मन जोड़ दिया !

कोई ढूँढ़त मथुरा नगरी, कोई जाय बनारस बास करे,

जब व्यापक रूप पिछान लिया, तब भरम का भंडा फोड़ दिया !

कौन करूँ गुरुदेव की भेंट, नहिं वस्तु दिखे तिहुँ लोकन में,

'ब्रह्मानन्द. समान न होय, धन मानिक लाख करोड़ दिया !

(९७)

यही समय गुरु पाँय में गोते लीजै खाय
गोता लीजै खाय नाम के सरवर माँही,
अवधि आय नगिचान दाँव फिर ऐसा नाहीं !
मानस तन संकरान्त महोदधि जात सिरानी,
ऐसी परवी पाय नहीं तुम महिमा जानो !
सतसंगत के घाट पैठ के करि असनाना,
तन मन दीजै दान बहुरि नहीं औना जाना !
पलटू बिलम न कीजिये ऐसा औसर पाय,
यही समय गुरु पाँय में गोता लीजै खाय !

(९८)

धुबिया फिर मर जायगा चादर लीजै धोय
चादर लीजै धोय मैल है बहुत समानी,
चल सतगुरु के घाट भरा जहँ निर्मल पानी !
चादर भई पुरानी दिनों दिन बार न कीजै,
सतसंगत में सौंद ज्ञान का साबुन दीजै !
छूटै कलमल दाग नाम का कलप लगावे,
चलिये चादर ओढ़ी बहुरि नहिं भवजल आवे !
पलटू ऐसा कीजिये, मन नाहिं मैला होय,
धुबिया फिर मर जायगा, चादर लीजै धोय !

(९९)

चोला भया पुराना आज फटे की काल

आज फटे की काल तिहु पर ललचाना,

तीनों पन गये बीत भजन का मरम न जाना !

नख सिख भये सफेद तिहूँ पर नाहिं चेते,

जोर जोर घन घरे गला औरन के रेते !

क्या अब करिहों यार काल ने किया तगादा,

चलै न एकौ जोर आन के पहुंचा बादा !

पलटू तेह पर लेत है, माया मोह जंजाल,

चोला भया पुराना आज फटे की काल !

(१००)

जीवन-मुक्त जियंति सब जाना, तब ही भक्त रूप भगवाना !

सतगुरु का प्रथमै कर ध्याना, तब घर भीतर घुसि कै जाना !

जो कोई भजन की विधि को जाना, वा से यह सब जुगत बताना !

शुद्ध धान्य है भजन खजान पलटू कह साधक हो दाना !

(१०१)

पलटू उधर जो पलटिगे, इधर उधर भा एक

सतगुरु ते सुमिरन सिखै, फरक परै नहिं नैक !

फरक परै नहिं नैक, शब्द पै सुरती दीन्हें,

ध्यान धुनी परकास , दसा लै रूप को चीन्हें !

सुर मुनि आशिष देंय, भये निज कुल परबीने,

पलटू कह तन त्यागि, अचलपुर बासा लीन्हें !

(१०२)

साहिब वही फकीर है, जो कोई पहुँचा होय

जो कोई पहुँचा होय, नूर का छत्र बिराजे,

सबद तखत बैठि नूर, आठपहरा बाजै !

तम्बू है असमान जमीं, का फरस बिछाया,

छिमा किया छिड़काव खुसी का मुस्क लगाया !

नाम खजाना भरा, जिकिर का नेजा चलता,

साहिब चौकीदार देखि इब्लीसहुँ डरता !

पलटू दुनियां दीन में, उनसे बड़ा न कोय ,

साहिब वही फकीर है, जो कोई पहुँचा होय !

****

आगे निम्नांकित कवि-कवयित्रियों की तीन-तीन रचनायें हैं :-

गुरु गोविन्द सिंह, नरसी महतो, मलूकदास, दरिया साहब

रसिक बिहारी, बनीठनी जुगलप्रिया, रानी रूपकुबरि

ललित किशोरी, मंजू केशी तथा नारायण स्वामी

(१०३)

प्रभु जू तो कह लाज हमारी
नीलकंठ नर हर नारायण, नील बसन बनवारी !
परम पुरुख परमेसर, सुआमी
पावन पौन अहारी !
माधव महा मोह मद मर्दन
मान मुकंद मुरारी !
निरविकार निर्जुर निद्रा बिन,
नरबिख नरक निवारी !
किरपा सिन्ध काल त्रि दरसी
कुकृत परनासन कारी !
धनुपनि घृतमान धराधर
अन विकार असधारी !
हौं मत मन्द चरण सरनागत
कर गह लेहु उबारी !

(१०४)

मैं हौं परम पुरख को दासा, देखन आयौ जगत तमासा !
एह कारण प्रभु मोहे पठायौ, तब मैं जगत जनम धर आयौ !
जिस दिन कही तिने तिस कहिहौं, अउर किसू ते बैर न गहिहौं !
जो हमको परमेस्वर उचारिहौं , तो सब नरक कुंड महिं परिहौं !
मैं का दास सबन का जानौ, या में भेद न रंच पछानौ !
मैं हौं परम पुरख को दासा, देखन आयौ जगत तमासा !
जो प्रभु जगति कहा सो कहिहौं , मृतलोक ते मौन न रहिहौं !

(१०५)

प्रानी परम पुरुख पग लागो
सोचत कहा मोह निंद्रा में.
कबहु सुचित ह्वै जागो !!
औरन कहा उपदेसत है पसु,
तोहे परबोध न लागो !!
सिंचित कहा परे बिखियन कह
कबहु बिखे रस त्यागो !!
केवल करम-भरम से चित हो
धरम करम अनुरागो !!
संग्रह करो सदा सिमरन को
परम पाप तज भागो !!
जाते दुख पाप न भेहै
काम जाल से तागा !!
जो सुख चाहो सदा सूबन को
तौ हर के रस पामा !!
नरसी महतो

(१०६)

नरसीलो टेर लगावे जी, थे आवो श्रीभगवान
मैं तेरे भरोसे आयो, पण सागे कछु न ल्यायो,
मैं आकर पछतायो जी, थे आवो श्रीभगवान !
या समय भात को आई, पण तूँ नहीं सूरत दिखाई,
यों होसी लोग हँसाई जी, थे आवो श्रीभगवान !
के निंद्रा थाने आई, के सत्यभामा बिलमाई ?

के भक्त कोई अटकायो जी, थे आवो श्रीभगवान !
यो भात भरह्यो नहीं जासी, तो नानीबाई मरजासी,
तो विरद तिहारी जासी, जी आवो श्रीभगवान !
जब देवकी-नन्दन आया, कंचन का मेह बरसाया,
यह वेद बिमल जस गाया जो, थे आवो श्रीभगवान !

(१०७)

दर्शन दो घनश्याम, नाथ ! मोरी अँखियाँ प्यासी रे,
मन मंदिर का दीप जला दो, घट-घट बासी रे !
मंदिर-मंदिर मूरत तेरी, फिर भी न देखी सूरत तेरी,
युग बीते ना आई मिलन की पूरनमासी रे !
द्वार दया का जब तू खोले, पंचम सुर में गूंगा बोले,
अँधा देखे, लंगड़ा चलकर पहुंचे कासी रे !
द्वार खड़ा तेरा मतवाला, मांगे तुमसे हार निराला,
नरसी की यह विनती सुन लो, हे दुःखनासी रे !

(१०८)

नाथ ! थारे सरणे आयो जी !
जचे जिसतरां, खेल दिखाओ, थे मन चायो जी !
बोझो सभी उतरयो मनको, दुख बिनसायो जी,
चिन्ता मिटा, बड़े चरणों को सहारो पायो जी !
सोच फिकर अब सारो थारे ऊपर आयो जी,
मैं तो अब निश्चिन्त हुयो अन्तर हरखायो जी !
जस अपजस सब थारो, नरसी दास कहायो जी,
मन भँवो थारे चरण कमल में जा लिपटायो जी !

(१०९)

राम कहो, राम कहो, राम कहो बाबरे,
अवसर न चूक भोंदू, पायो भलो दांव रे !
जिन तोकों तन दीन्हों, ताकौ न भजन कीन्हों,
जनम सिरानो जात, लोहे कैसा ताव रे !
राम जी की गाय, गाय, राम को रिझाव रे,
रामजी के चरण-कमल, चित्तमांहि लाव रे !
कहत मलूकदास छोड़ दे तैं झूठी आस !
आनन्द मगन होइकैं, हरिगुन गाव रे !

(११०)

हरि समान दाता कोउ नाहीं
सदा बिराजैं संतन माहीं !
नाम बिसंभर बिस्व जिआवै,
सांझ बिहान रिजिक पहुँचावै !
देइ अनेकन मुखपर ऐने ,
औगुन करै सो गुन करि मानै !
काहू भांति अजार न देई,
जाहो को अपना कर लेई !
घरी घरी देता दीदार,
जन अपने का खिदमतगार !
तीन लोक जाके औसाफ,
जनका गुनह करै सब माफ़ !
गरुवा ठाकुर है रघुराई,
कहैं, मलूक क्या करूँ बड़ाई !

(१११)

तेरा मैं दीदार दीवाना !

घड़ी घड़ी तुझे देखा चाहूँ, सुन साहेब रहमाना !

हुआ अलमस्त खबर नहिं तन की, पिया प्रेम का पियाला,

ठाढ़ होऊँ तो गिर-गिर परता, तेरे रंग मतवाला !

खड़ा रहे दरबार तुम्हारे, ज्यों घर का बन्दाजादा,

नेकी की कुलाह सिर दिये, गले पैरहन साजा !

तौजी और निमाज न जानूँ, न जानूँ धरि रोजा,

बांग जिकर तबही से बिसरी, जबसे यह दिल खोजा !

कह मलूक अब कजान करिहों, दिलहीसों दिल लाया,

मक्का हज्ज हियमें देखा, पूरा मुरसिद पाया !

दरिया साहब

(११२)

बाबुल कैसन बिसरो जाई ?

यदि मैं पति सँग रल खेलूँगी, आपा धरम समाई !

सतगुरु मेरे किरपा कीनी, उत्तम बर परणाई,

अब मेरे साईं को सरम पड़ैगी लेगा हृदय लगाई !

थे जनराय, मैं भोली-बाली, थे निरमल मैं मैली,

थे बतलाओ, मैं बोल न जानूँ, भेद न सकूँ पहेली !

थे ब्रह्मभाव, मैं आतप कन्या, समझ न जानूँ बानी,

दरिया कहै पति पूरा पाया, यह निश्चै कर जानी !

(११३)

राम नाम मेरा प्रान अधार

जाके उर उपजी नहिं भाई,

सो क्या जाने पीर पराई !

ब्यावर जानै पीर की सार,

बाँझ नार क्या लखै बिकार !

पतिबरता पतिकौ ब्रत जानै,

बिभिचारिन मिल कहा बखानै !

हीरा-पारख जौहरी पावै,

मूरख निरखकै कहा बतावै !

लागा घाव कराहै सोई,

कौगतहार के दरद न कोई !

रामनाम मेरा प्रान-आधार ,

सोई समरस जो पावनहार !

(११४)

सो मेरे मना, कब भजिहौं सतनाम ?

बालपन हंस खेल गँवायो, ज्वानी व्यापो काम,

वृद्ध भयो तन काँपन लाग्यो, लटकन लागे काम !

लाठी टेक चलत मारग में, सह्यो जात नहीं घाम,

कानन बधिर नैन नहिं सूझै, दाँत भये बेकाम !

घरबारी हो बिमुख सतावै, पुत्र करत बदनाम,

बरबरात है बिरथा बूढा, अटपट आठो याम !

खटिया से भुईं पर कर दैहैं, छूटि जैहैं धन धाम,

जन दरिया तब का करिहौं, जब परिहैं यम ते काम !

(११५)

तुलसी साहब तोसे अरज करूँ सांवरिया, मोसे मन नहिं जीत्यो जाय

मन मेरा यह चंचल भारी, छिन-छिन लेवे राड़ उधारी,

तोड़ फेंक दे ज्ञान पिटारी, ना कछु पार बसाय !

मन मेरा यह चंचल घोडा, सत्संग का मानत नहीं कोड़ा,

ज्ञान ध्यान का लंगर तोडा, पल-पल में हिन्-हिनाय !

मन हाथी नहीं काबू मेरे, न्हाय धोय सिर धूल बखेरे,

महावत को भी नीचा गेरे, जरा नहिं भय खाय !

कैसे राखूँ मन को बस में, मन कर राखा मुझको बस में,

तुलसी का मन विषय कुरस में, पल-पल में ललचाय !

(११६)

दिल का हुजरा साफ़ कर, जाना के आने के लिए

ध्यान गैरों का हटा, उसके बुलाने के लिए !

चश्मे-दिल से देख याँ, जो जो तमाशे हो रहे,

दिलसतां ! क्या क्या है तेरे, दिल सताने के लिए !

एक दिल लाखों तमन्ना, उस पै और ज़्यादा हविस,

फिर ठिकाना है कहाँ, उसके बैठाने के लिए !

नक़ली मन्दिर मसजिदों में, जाय सद अफ़सोस है,

कुदरती मसजिद का साकिन, दुःख उठाने के लिए !

कुदरती काबे की तू महराब में सुन ग़ौर से,

आ रही धुर से सदा, तेरे बुलाने के लिए !

क्यों भटकता फिर रहा तू, ऐ तलाशे यार में,
रास्ता शहेरग में है, दिलवर पे जाने के लिए !
मुर्शिदे कामिल से मिल तू, सिदक़-ओ-सबूरी से तक़ी,
जो तुझे देगा फ़हम शहेरग के पाने के लिए !
गोशे बातिन हो कुशादा जो करे कुछ दिन अमल,
ला-इलाही-अल्ला हो-अकबर पास जाने के लिए !
ये सदा तुलसी की है आमिल अमल कर ध्यान से,
कुन क़ुरां में है लिखा अल्ला-हो-अकबर के लिए !

(११७)

बार-बार विनती करूँ, सतगुरु चरन निवास
सतगुरु चरन निवास, बास मोहि दीन्ह लखाई,
नित करूँ विलास, पास घर अपने आई !
मैं अति पति मति हीन, दीन देखा मोहि साईं,
लीन्हा अंग लगाई कहूँ, अस कौन बड़ाई !
तुलसी मैं अति हीन हूँ, दीन्हा अगम आवास,
बार बार विनती करूँ, सतगुरु चरन निवास !

यारी साहब

(११८)

बिरहनी मन्दिर दियनाँ बार
बिन बाती बिन तेल जुगत सो बिन दीपक उजियार,
प्रान प्रिया मेरे गृह आये रचि पचि सेज सँवार !
सुखमन सेज परम तत रहिया पिय निरगुन निरकार,
गावहु री मिलि आनन्द मंगल यारी मिल गये यार !

(११९)

सतगुरु है सत पुरुष अकेला,

पिण्ड ब्रह्माण्ड के बाहर मेला !

दूरतें दूर ऊँचे से ऊँचा,

बाट न घाट गली नहिं कूचा !

आदि न अन्त मध्य नहिं तीरा,

अगम अपार अति गहिर गम्भीरा !

कच्छ दृष्टि तहँ ध्यान लगावै,

पल महँ कीट भृंग होइ जावै !

जैसे चकोर चंद्र के पासा,

दीसै धरती बसै अकासा !

कह यारी ऐसे मन लावै,

तब चातक स्वांति जल पावै !

(१२०)

उडु उडु रे बिहंगम चढ़ अकास

जहँ नहिं चन्द सूर, निसि-बासर,

सदा अमरपुरी आगम बास !

देखै उरध अगाध निरंतर,

हरख सोक नहिं जम कै त्रास !

कह यारी उन्ह बधिक-फाँस नहिं,

फल पायो जगमग परकास !

मैं अपनौ मनभावन लीनौं

मन दै मोल लियौरी सजनी, इन लोगन को कहा न कीनौ,

रत्न अमोलक नन्ददुलारी नवल लाल रंग भीनौं !

कहा भयौ सबके मुख मोरे मैं पायो पीव प्रबीनौं,

रसिकबिहारी प्यारी प्रीतम सिर बिधना लिख दीनौं !

(१२२)

रतनारी हो थारी आँखड़ियाँ

प्रेम छकी रस बस अलसानी , जाणे कमल की पांखड़ियाँ !

सुन्दर रूप लुभाई गति मति , हो गयी ज्यों मधु मालडियाँ !

रसिकबिहारी वारी प्यारी , कौन बसी निस काँखड़िया !

(१२३)

हो झालो दे छे रसिया

हो झालो दे छे रसिया नागर पनाँ,

साराँ देखे लाज मरां छा आवां किण जतनां !

छैल अनोखो कह्यो न मानै लोभी रूप सनां,

रसिकबिहारी नड़द बुरी छै लाग्यो म्हारो मना !

जुगल प्रिया

(१२४)

सुनिये नाथ गरीब निवाज

सुनिये नाथ गरीब निवाज, आई सरन तुम्हें सब लाज !

अधम-उधारन बिरद सम्हारन, त्रिभुवन के सिरताज,

कुंजद्वार हौं खड़ी कबैकी, त्राहि त्राहि महाराज !

करुनाकर अब बोलि लीजिये, करिये बिलम न आज,

जुगलप्रिया को अभय कीजिये, यह नहिं कछु बड़ काज !

नाथ अनाथन की जानै री

कहा कहूँ को मानै मेरी,

सिर बीती सो ही जानै री !

रसना रस ना सब रस फीके,

दृगनि न और रस लागै री !

स्रवननि दूजी कथा न भावै,

सुरत सदा पियकी जगै री !

बढ्यो बिरह अनुराग अनोखो,

लगन लगी मन नहिं लागै री !

जुगलप्रिया के रोम-रोम तें,

स्याम ध्यान नहिं पल त्यागै री !

(१२६)

श्री गुरुदेव भरोसो साँची

अष्ट याम गुरु ध्यान हिये धरु,

मारो काम क्रोध रिपु पाँचौ !

तन मन धन सर्बस लै अरपौ,

श्रीगुर कृपा भक्ति रंग रांचौ !

जुगलप्रिया श्री गुरु गोविन्द को,

निमिष न भूल लखै सब कांचौ !

रानी रूपकुंवरि (१२७)

राखत आये लाज जनन की

राखी मीरा नारि अहिल्या लाज, विभीषण चरण गिरन की,

ध्रुव प्रह्लाद विदुर सुधि राखी, द्रुपद सुता के चीर हरण की !

गोपी, ग्वाल-बाल, ब्रज बनितन, राखी सुधि गिरि नखन धरन की,

सोई लाज प्रभु राखन अइहैं, रूप कुँवरि के सब ग्रह जन की !

(१२८**)**

हमारे प्रभु कब मिलिहैं घनश्याम

तुम बिन व्याकुल फिरत चहुँ दिशि,

मन न लहै विश्राम !

दिन नहिं चैन, रैन नहिं निन्दिया,

कल न परे पल याम !

जैसे मिलि प्रभु विप्र सुदामहिं,

दीन्हें कंचन धाम !

रूप कुँवरि रानी सरनागत,

पूरन कीजे काम !

(१२९**)**

करहु प्रभु भवसागर सों पार

कृपा करहु तो पार होत हौं, नहिं बूड़ति मंझधार,

गहिरो अगम अथाह थाह नहिं, लीजै नाथ उबार !

मैं हौं अधम अनेक जनम की, तुम प्रभु अधम-उधार,

रूपकुँवरि. बिन नाम श्याम के, नहिं जग में निस्तार !

(१३०)

मन पछतैहौ भजन बिनु कीने

धन दौलत कछु काम न आवै,

कमलनयन -गुन चित्त बिनु दीने !

देखत कौ यह जगत संगाती,

तात मात अपने सुख भीने !

ललित किशोरी दुंद मिटै ना,

आनन्द कंद बिना हरि चीने !

(१३१)

लाभ कहा कन्चन तन पाये

भजे न मृदुल कमल दल लोचन,

दुःख मोचन हरि हरखि न ध्याये !

तन मन धन अरपन ना कीन्हों,

प्रान प्रानपति गुननि न गाये !

जीवन, धन, कलघौत धाम सब,

मिथ्या आयु गँवाय गँवाये !

गुरुजन गरब, बिमुख रँग राते,

डोलत सुख सम्पति बिसराये !

ललित किसोरी मिटै ताप ना,

बिनु दृढ चिंतामनि उर लाये !

(१३२)

अब तौ तोरेइ हाथ बिकानो

मृदु बोलन मुसक्यान माधुरी, तन मन नैन समानी !

लोक लाज कुल-कानि तजी सब जामें तुव रूचि चीनी ,

धरम करम ब्रत नेम सबै सो, तोई रँग रस भीनी !

तुव कारन यह भेष बनायौ , प्रगट उधरि करि नाची,

नाउँ कुनाऊँ धरो किन कोऊ, हौं नाहिन मति कांची !

होनी होय सो होय भले ही, तन मन लगन लगी है !

ललित किसोरी लाल तिहारे, मति अनुराग पगी है !

मञ्जु केशी

(१३३)

सुख सजनि मिलै नहिं या जग में

धर्मराज नल आदि नृपतिगण,

झूलि रहे सखि या मग में !

केते मुनि ऋषि खोजत हारे,

कंटक चुभा लिये पग में !

बहुविधि सविधि कर्मधर्महु करि ,

कीन्हें श्रम जप तप जग में !

केशो बिनु हरि-भगति न थिर भये,

आये गये नर नग खग में !

(१३४)

मानहु प्यारे, मोर सिखावन

बूँदे-बूंद तालाब भारत है, का भादों का सावन !

तैसहि नाद-बिंदु को धारण अन्तः सुख सरसावन !

ध्वनि गूंजै जब जुगल रंध्र सौं परसै त्रिकुटी पावन !

हियकी तीव्र भावना थिर करू पड़ै दूध में जावन !

केशी सुरति न टूटन पावै दिव्य छटा दरसावन !

(१३५)

आपनि रूप परखिये आपै

निज नयनन ही निज मुख दीखत

अपनौ सुख-दुःख आपुई व्यापै !

अपनी गति बने आपु बनाये

जाड़ जात निज तन तप तापै !

निज करसों निज अश्रु पोंछिये

का सुझाय सुइ करसों छापै !

तटपै बसि प्रशांत जल निरखहु

का क्षति-लाभ सिंधुतल मापै !

गहत न लहत बृथा दिन खोबत

कथत मथत ही शास्त्र कलापै !

केशी आत्म प्रतीति फुरति है

राम नाम अव्याहत जापै !

नारायण स्वामी

(१३६)

प्रीतम तू मोहि प्रान ते प्यारौ

जो तोहि देखि हियो सुख पावत, सो बड़ भागनवारौ !

तू जीवन धन सरबस तू ही, तो ही दृगन कौ तारौ !

जो तोको पल भर न निहारूँ, दीखत जग अँधियारौ !

मोद बढ़ावन के कारन हम, मानिनी रूप धारौ !

नारायन हम दोउ एक हैं, फूल सों गन्ध न न्यारौ !

(१३७)

जाहि लगन लगी घनश्याम की

धरत कहूँ पग, परत है कितहूँ,

भूल जाय सुधि धाम की !

छवि निहार नहीं रहत सार कछु,

धरी पल निसि दिन याम की !

जित मुँह उठै तितै ही धावै,

सुरति न छाया धाम की !

अस्तुति निन्दा करौ भले ही,

मेंड़ तजी कुल गाम की !

नारायन बौरी भई डोलै,

रही न काहू काम की !

(१३८)

मूरख छाँड़ि वृथा अभिमान

औसर बीत चल्यौ है तेरौ, दो दिन कौ मेहमान !

भूप अनेक भये पृथिवी पर, रूप तेज बलवान,

कौन बच्यौ या काल ब्याल तें, मिट गये नाम-निसान !

धवल धाम , धन, गज, रथ, सेना, नारी चन्द्र समान,

अंत समै सबहीं को तजिकै, जाय बसै समसान !

तजि सत्संग भ्रमत विषयन में, जा विधि मरकट स्नान,

दिन भर बैठि न सुमिरन कीन्हों, जासौं होय कल्याण !

रे मन मूढ़, अनत जनि भटकै, मेरौ कह्यौ अब मान,

नारायन ब्रजराज कुंवर सौं, बेगहिं करि पहिचान !

****

आगे निम्नलिखित कवि-भक्तों की 2-2 **रचनायें ली गयी हैं :-**

विद्यापति, अमीर खुसरो, रसखान, गदाधर भट्ट, प्राणसखा

यकरंग साहब, स्वामी हरिदास, धर्मदास, नंददास, मुजीब साहब,

भारतेन्दु हरिशचन्द्र और बाबा मैहीदास !

माधव कत तोरा करब बड़ाई

उपमा तोहर कहब ककरा हम,

कहितहूँ अधिक लजाई !

जौं श्रीखण्ड सौरभ अति दुर्लभ,

तौं पुनि काठ कठोर !

जौं जगदीश निसाकर तौं पुनि,

एक ही पच्छ इंजोर !

मनि समान औरों नहीं दोसर,

तिनकर पाथर नामे !

कनक कदलि छोटे लज्जित भए,

की कहूं ठामहि ठामे !

तोहर सरिस एक तोहं माधव,

मन ही ईछ अनुमान !

सज्जन जन सौं नेह कठिन धिक्,

कवि विद्यापति भान !

(१४०)

कखन हरब दुःख मोर, हो भोलेनाथ

दुखहि जनम भेल दुखहि गमायब,

सुख सपनेहु नहिं मेल हो भोलानाथ !

यहि भवसागर यहि कतहूँ नहिं,

भेख धरु कर आये हो भोलानाथ !

अक्षत चन्दन और गंगा जल ,

बेल पाती हम देल हो भोलानाथ !

भनई विद्यापति मोर भोलानाथ गति,

देह अभय वर मोहिं हो भोलानाथ !

अमीर खुसरो सुहाग

(१४१)

काहे को ब्याही बिदेस रे, सुन बाबुल मोरे

ताख भरा मैंने गुड़ियों का छोड़ा, छोड़ा सहेलियों का गाँव रे,

सुन बाबुल मोरे !

हम तो बाबुल तोरे अंगना की बछिया, जित हांके तित जायरे,

सुन बाबुल मोरे !

सोना भी दीना रूपा भी दीना, दीना सब धन धान रे,

सुन बाबुल मोरे !

एक न दीनी मोरे सिर की कंघी, सासू दे ताने हज़ार रे,

सुन बाबुल मोरे !

अंबुआ तले मोरा डोला जो निकला, कोयल शब्द सुनाय रे,

सुन बाबुल मोरे !

तू क्यों री ताने मारे काली कोयलिया, हमतो चले पीके देश रे,

सुन बाबुल मोरे !

डोले के पीछे मेरा बाबुल जो दौड़ा, समधी दे ताने हज़ार रे,

सुन बाबुल मोरे !

काहे को रोका डोला बीच बजरिया, ले चल डोला कहार रे,

सुन बाबुल मोरे !

बेटी मेरी तेरे महलों की दासी, हम तेरे बांदी गुलाम रे,

सुन समधी मोरे !

बेटी मेरी तेरे महलो की रानी, तू भया मेरा भरतार रे,

सुन समधी मोरे !

घुँघटा उठा के मैंने जो देखा, आया पिया जी का गाँव रे,!

सुन समधी मोरे !

खुसरो साजन की हो गयी गोरी, तेरा दिन-दिन बढे सुहाग रे,

सुन समधी मोरे !

(१४२)

छाप तिलक सब कीनी, मोसे नयना मिलाय के

बलि बलि जाऊँ मैं तो तोरे रंगरिज्वा,

अपनी सी रंग दीनी , मोसे नयना मिलाय के !

प्रेम भटी का मदवा पिलाय के,

मदमाती कर दीनी, मोसे नयना मिलाय के !

हरी हरी चूड़ियाँ, गोरी गोरी बहियाँ,

बाहँ पकड़ हर लीनी, मोसे नयना मिलाय के !

खुसरो निज़ाम के बलि-बलि जाये,

आज सुहागन कीनी, मोसे नयना मिलाय के !

रसखान (१४३)

मानुष हौं तौ वही रसखानि

बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वालन !

जो पसु हौं तौ कहा बसु मोरो,

चरौ नित नन्द की धेनु मझारन !

पाहन हौं तौ वही गिरी को,

जो धरयो कर छत्र पुरंदर धारन !

जो खग हौं, तौ बसेरौ करौं,

मिलि कालिंदी कूल कदंब की डारन !

या लकुटी अरु कामरिया पर ,

राज तिहूँ पुर को तजि डारौं !

आठहुँ सिद्धि नवौं निधि को सुख,

नन्द की गाइ चराह बिसारौं !

आँखिन सों रसखानि कबौं,

ब्रज के बन बाग़ तड़ाग निहारौं !

कोटिक हैं कलघौत के धाम,

करील के कुंजन ऊपर बारौं !

(१४४)

सेस महेस गनेस दिनेस, सुरसेहु जाहिं निरंतर गावैं

जाहि अनादि अनंत अखंड, अछेद अभेद सुबेद बतावैं !

नारद से सुक व्यास रटैं, पचि हारे तऊ पुनि पार न पावें,

ताहि अहीर की छोहरियाँ, छछिया भरि छाछ पै नाच नचावैं !

धूरि भरे अति स भित स्याम जू, तैसी बनी सिर सुन्दर चोटी,

खेलत खात फिरें अंगना पग पैजनी बाजती पीरी कछोटी,

वा छवि कौ रसखानि विलोकत, वारत काम कला निज कोटी,

काग के भाग बड़े सजनी ! हरि हाथ सों लै गयो माखन रोटी !

गदाधर भट्ट (१४५ **)**

हरि हरि हरि हरि रट रसना मम

पीवति ख्याति रहित निधरक भई, होत कहा तोको स्रम !

तैं तो सुनी कथा नहिं मोसे, उघरे अमित महाधम,

ग्यान ध्यान जप तप तीरथ व्रत, जोग जग्ग बिनु संजम !

हेमहरन द्विजद्रोह मान मद, पर-गुरु-अरु दारागम,

नाम प्रताप प्रबल पावक के, होत जात सलभा सम !

इहि कलिकाल कराल ब्याल, विषज्वाल विषम भोये हम,

बिनु इहि मन्त्र गदाधर के क्यों, मिटिहै मोह महातम !

(१४६ **)**

है हरितें हरिनाम बडेरो

ताकों मूढ़ करत कत झेरो !

प्रगट दरस मुचकुंदहिं दीन्हों,

ताहु आयसु भो तप केरो !

सुतहित नाम अजामिल लीनों,

या भव में न कियो फिर फेरो !

पर-अपवाद स्वाद जिय राच्यो,

बृथा करत बकबाद घनेरो !

प्राणसखा

(१४७**)**

मानुष को रिझायबें को मोमे नाहिं एकौ गुन,
गुनहू जो पाइये तो कौन को रिझाइये **?**
जाति कौ अयाचिक हरि याचवो न आवै मोय,
याचवो हूँ आइये तो काके द्वार जाइये **?**
अतुल भण्डार दान मान सब तुम्हारे चरन,
तुमसो कृपालु छोड़ काको सिर नाइये **?**
वेद और पुरानन माहिं सुनियत हज़ारन हाथ,
एक हाथ प्राणनाथ, प्राण दिस उठाइये !

(१४८**)**

ऐ हो नन्द नन्दन जगवंदन करुणा निधान,
आपको कहाय अब काके द्वार जाइहौं **?**
भारी उपहास जोपै दूसरों से राखूँ आस **,**
जग निवास दास होके व्यंग क्यों सहइहौं **?**
योगक्षेम, लोक परलोक सब तिहारे हाथ,
तुमसों समरत्थ छाँड़ि काकी शरण पाइहौं **?**
जेते पतित तारे गिने का पे जायें सारे ऐसे,
पावन चरण छाँड़ि और कौन पग झुकइहौं **?**

(१४९)

यकरंग साहब सांवरिया मन भाया रे

सोहिनी सूरत मोहिनी मूरत, हिरदै बीच समायो रे !

देश में ढूँढा विदेश में ढूँढा, अन्त को अन्त न पाया रे !

काहू में अहमद काहू में ईसा, काहू में राम कहाया रे !

सोच विचार कहै यकरंग जिन पिया ढूँढा तिन पाया रे !

(१५०)

मितवा रे नेकी से बेडा पार

जो मितवा तुम नेकी न करिहौ,

बूड़ जैहौ मझधार !

नेक करम से धरम सुधारिहै,

जीवन के दिन चार !

यकरंग माँगो खैर हशर की,

जासे हो निस्तार !

स्वामी हरिदास (१५१)

गहौ मन सब रस की रस-धार

लोक वेद कुल बरनै तोड़िये,

भजिये नित्य विहार !

निज कामिनी कंचन धन त्यागो,

सुमिरौ श्याम उदार !

कहि हरिदास रीति संतन की,

गादी को अधिकार !

हरिको ऐसोई सब खेल

मृग तृसना जग व्याप रही है,

कहुँ बिजोरो न बेल !

धनमद जोवनमद औ राजमद,

ज्यों पंछिन में डेल !

कहि हरिदास यहै जिय जानौं,

तीरथ को सो मेल !

धर्म दास (१५३)

गुरु पइयाँ लागूँ नाम लखाय दीजो रे

जनम जनम का सोया मनुआ

शब्दन मार जगाय दीजो रे !

घट अंधियार नैन नहिं सूझै

ज्ञान का दीप जलाय दीजो रे !

विष की लहर उठत घट भीतर

अमृत बूँद चखाय दीजो रे !

गहरी नदिया बेगि बहे धारा

केवट पार लगाय दीजो रे !

धर्मदासकी अरज गुसाईं

अब की खेप निभाय दीजो रे !

(१५४)

हम सत्य नाम के व्यौपारी

कोइ-कोई लादै काँसा पीतल

कोइ-कोई लौंग सुपारी,

हम तो लादा नाम धनी का

पूरन खेप हमारी !

पूँजी न टूटै, नफा चौगुना

बनिज किया हम भारी !

हाट लगाती रोक न सकिहै

निरभय गैल हमारी !

नन्द दास (१५५)

राम-कृष्ण कहिये उठि भोर

अवध-ईस वे धनुष धरे हैं, यह ब्रज-माखन चोर !

उनके छत्र चँवर सिंहासन, भारत सत्रुहन लछमन जोर ,

इनके लकुट मुकुट पीताम्बर, नित गैयनसंग नन्द किसोर !

उनसागर में सिला तराई, इन राख्यौ गिरी नख की कोर,

नंददास प्रभु सब तज भजिये, जैसे निरखत चंद चकोर !

(१५६)

बसौं भूमि बृन्दाबन -धाम

जो गिरि रुचै तौ बसौं गोबर्धन,

गाम रुचै तो बसौं नंदगाम !

नगर रुचै तो बसौं श्रीमधुपुरी,

सोभा सागर अभिराम !

सरिता रुचै तौ बसौं जमुनातट,

सकल मनोरथ पूरन काम !

नंददास काननहि रुचै तौ,

बसौं भूमि बृन्दाबन धाम !

मुजीब साहब

(१५७)

आज मैं तो लैहौं गगरिया भराय

प्यारे सतगुरु तेरे पनघट पर

बैठी हूँ आस लगाय !

रीती गागर कब लौं लै डोलूँ

तुम सों प्रीतम पाय !

भरदे मुजीब की गागर भरदे

काहे को बहुत खिजाय !

(१५८)

मोहे सोबत स्याम जगाय गयो, सपने में दरस दिखाय गयो,

मुख मोड़ मुस्काय गयो, कछु नैन से सैन चलाय गयो !

छवि देख पिया की मैं दंग रही, सब मन में ही मन की उमंग रही,

न उचंग रही, न तरंग रही, वह तो रोम-रोम रंग छाय रह्यो !

दई मारी गई मोरी नींद उचट, फिर पायो न पिया को अपने निकट,

घबरा के लगी देखन झटपट, कित जाने वह राम बिलाय गयो !

अब आवत नींद न जात जिया, सखि कैसे मिलें देखन को पिया,

चलौ डूब मरें गहरी नदिया, यही राह मिलन की बताय गयो !

यों रोये से होत मुजीब कहा, मिट जाय दुई तो मिटै झगड़ा,

उसे ढूंढ़त है तू इत उत क्या, वह तो तो ही में देख समाय गयो !

भारतेन्दु हरिशचंद्र

(१५९)

प्यारे अब तौ तारेहि बनिहैं

नाहीं तो तुम कों का कहिहै जो मेरी गति सुनिहै !

लोक बेद में कहत सबै हरि अभय-दान के दानी,

तेहि करिहौ साँचो कै झूठो सो मोहि भाखो बानी !

भले बुरे जैसे हैं तैसे तुम्हरे ही जग जानै,

हरीचंद कों तारेहि बनिहै को अब और ही मानै !

(१६०)

नाथ, तुम अपनी ओर निहारो

हमरी ओर न देखहु प्यारे, निज गुन गनन बिचारो !

जौ लखते अब लौं जन-औगुन , अपने गुन बिसराई,

तौ तरते किमि अजामील से पापी देहु बताई !

अब लौं तो कबहूँ नहिं देखे, जन के औगुन प्यारे,

तौ अब नाथ नई क्यौं ठानत, भाखहु बार हमारे !

तुब गुन क्षमा दया सो मेरे, अध् नहिं बड़े कन्हाई,

तासों तारि लेहु नन्द-नंदन हरीचंद को धाई !

(१६१)

अंतर के अंतिम तह में गुरु हैं

मन का पता पाता नहीं,

नियनों के तिल में ज्योति उनकी

नज़र में आता नहीं !

अंग-अंग हर वक्त रहता, प्रकट हो आता नहीं,

हो रहा हैरान सा दिल, जल्द दिखलाता नहीं !

खोजते फिरते बहुत से, इस जगत में जाबजा,

अंतर के अंतिम तह के रहबिन्द, कोई उसे पाता नहीं !

बिन दया संतन की नाहीं जानना, इस राज़ को,

हुआ नहीं, होता नहीं है, होनहारा है नहीं !

(१६२)

हंसा जे पूछे रामा

हंसा जे पूछे हो रामा, सुनु भाई काया,

तोहरा हमारा कैसन रीत हो **?**

तुहूँ जब चलल हो हंसा, अमरपुर देस हो

हमहू जरिये होइब राख हो !

चार जनाहो मिलि खटिया उठावइहो

ऊपर से चदरि ओढ़ाई हो !

उत्तरे दखिनवाहो रामा खटिया लगावइहो,

इहे बाते देसवा के रीत हो !

घुमिये-घुमिये हो रामा अगिया लगावईहो

हमहू जरिये होइब राख हो !

भइया बहनिया हो रामा रोधना पसारइहो

हमहू जरिये होइब राख हो !

एहिरे मंदिरवा में रामा, बड़ा रे सुख कयनिहो

सोहुओ जरिये भईलई राख हो !

इतना जे बतिया हो रामा पूछैँ दास कबिरिहो

राखिलेहूं चितवा में आपन हो !

स्वामी रामानन्द (१६३)

कब जाइये , घर लाग्यो रंग,

मेरा चित न चलै मन भयउ पंग !

एक दिवस मन उठी उमंग,

धसि चन्दन चोवा बहु सुगन्ध !

पूजन चाली ब्रह्म-ठाइ,

सो ब्रह्म बतायौ गुरु मनहिं माहिं !

जहँ जाइये तहँ जल पखान,

तू पुरि रह्यो है सब सामान !

वेद-पुरान सब देखे जोइ,

वहीँ जाइये जहँ तू न होइ !

सतगुरु, मैं बलिहारी तोर,

जिनि सकल विकट भ्रम काटे मोर !

रामानन्द स्वामी रमत ब्रह्म, गुरु का सबद काटै कोटि करम !

एकनाथ जी (१६४)

गुरु कृपांजन पायो मेरे भाई,

राम बिना कछु जानत नाहीं !

अंतर राम हि, बाहर राम हि,

जहँ देखौ तहँ राम हि राम हि !

जागत राम हि, सोवत राम हि ,

सपने हू में देखौं राम हि !

एका जनार्दनी भाव ही नीका,

जो देख्यौं सो राम सरीखा !

नामदेव जी (१६५)

मैं अंधुले की टेक तेरा नाम खुंदकारा !

मैं गरीब, मैं मसकीन तेरा नाम अधारा !

करीमा रहीमा अल्लाह तू गनी !

हाजरा हजूरी दरि पेसि तू मनी !

दरिआब तू, दिहंद तू, बीसीआर तू धनी !

देहि लेहि एक तू दीगर को नहीं !

तूँ दानां, तू बिनाँ मैं बीचरू किया करी !

नामे; चे सुआमी बखतंद तू हरी !

तुकाराम जी (१६६)

वेद अनन्त बोलिला

अर्थ इतिकाची साधिला !

बिट्ठोवासी शरण जावैं

निजी निष्ठा नाम गावें !

सकल शास्त्रांचा विचार

अन्ति इतुकाची निर्धार !

अठरा पुराणीं सिद्धान्त

तुका म्हणे हाचि हाँत !

हज़रत निजामुद्दीन

(१६७)

परबत बाँस मँगाव मेरे बाबुल, नीके मंडवा छाव रे,

सोना दीन्हा, रूपा दीन्हा, बाबुल दिल दरियाव रे !

हाथी दीन्हा, घोडा दीन्हा, बहुत बहुत मन चाव रे,

डोलिया फँदाय पिया लै चलिहैं, अब संग नहीं कोई आव रे !

गुड़िया खेलन माँ के रह गयी, नहिं खेलन को दाव रे,

निजामुद्दीन औलिया बहियाँ पकरि चले, घरिहों वाके पाँव रे !

शेख फरीद

(१६८)

जितु दिहाड़े घनवरी साहे लिये लिखाई

मलुक जिकनी सुणीदा मुहू देखाले आइ !

जिन्दु निमाणी कढीऐ हड़ा कूँ कड़काई,

साहे लिखे न चलणी जिँदू कूँ समझाइ !

जिन्दु बहूटी मरणु वरु लै जासी परणाइ,

आपण हथी जोलिकै कै गलि लग्गै धाइ !

वालही निक्की पुरसलात कनी ना सुणी आइ,

फरीदा किडी पवंदई खड़ा न आपु मुहाइ !

बुल्ले शाह (१६९)

साईँ के नाम की बलि जाऊँ

सुमिरत नाम बहुत सुख पायो,

अन्त कतहुँ नहीं ठाँव !

नाम बिना नर स्वान -मंजारी,

घर घर चित लै जाँव,

बिन दरसन परसन मन कैसो,

ज्यों लूले को गाँव !

पवन मथानी हिरदै ढूँढ़ो,

तब पावै मन ठाँव,

जन बुल्ला बोलइ कर जोरै,

सतगुरु चरन समाँव !

बाबा मछँदर नाथ (१७०)

बंगला अजब बन्या महाराज, जा में नारायण बोले

पाँच तत्व की ईंट बनाई, तीन गुनू का गारा,

छत्तिसु की छतत बनाई, चेतन है चेजारा !

इस बंगले के दस दरवाजा, बीच भवन का खम्भा,

आवत-जावत कछु नहीं दीखै, ये भी एक अचम्भा !

इस बंगले में चौपड़ मांडी, खेले पाँच पचीसा,

कोई तो बाजी हार चल्यो है, कोई चल्या जुग जीता !

इस बंगले में पातुर नाचे, मनवा ताल बजावे,

निरत सुरत का बाँध घुँघरू, राग छतीसूँ गावे !

कहै **मछन्दर** सुन जती गोरख, जिन ये बंगला गाया,

इस बंगले का गावनहारा, बहुरि जनम नहिं पाया !

हित हरिवंश (१७१)

मोहन लालके रँग राची

मेरे ख्याल परौ जिन कोऊ, बात दसौ दिसि माची !

कंत अनंत करौ किन कोऊ, नाहिं धारना साँची,

यह जिय जाहु भले सिर ऊपर, हौं तू प्रगट ह्वै नाची !

जाग्रत सयन रहत ऊपर, मनि, ज्यों कंचन संग पाँची,

हितहरिबस डरौं काके डर, हौं नाहिन मति काँची !

शिव नारायण (१७२)

आनंद झूला चाहे जो झूलन, पैंग विचार बढ़ाय रे

दया धर्म के खंभे गाढ़े, ज्ञान की डोर डलाय रे,

सत्य की पटरी पै बैठ ध्यान से, प्रेम की पैंग बढ़ाय रे !

हो एकाग्र शुद्ध चित झूलै, वनिता-वृत्ति बिठाय रे ,

दृढ़ आसन सों बैठ, धैर्य-अवलम्बन छूट न जाय रे !

प्रेम सहित विज्ञान डोरि गह, सत्गुरु जबहिं झुलाय रे,

भूमि गिरन के शोक अरु भय से, निश्चय तौ छुट जाय रे !

शिवनारायण एहिं विधि झूलै , ऊधर्व पैंग जब जाय रे,

सुन्दर अमर-नगर की गलियाँ, तब कहुँ देखन पाय रे !

कुंभन दास

(१७३)

भगत कौ कहा सीकरी काम
आवत जात पन्हैया टूटी,
बिसरि गयो हरिनाम!
जाको मुख देखे लागै दुःख,
ताको करी प्रणाम!
'कुंभनदास' लाल गिरधर बिनु,
यह सब झूठो धाम!

दूलन दास

(१७४)

नीकौ न लागै बिनु भजन सिंगरवा
का कहीं आयो, हियाँ बरत्यो नाहीं,
भूलि गयल तोरा कौल-कररवा!
साँचा रँग हिये उपजत नाहीं,
भेष बनाय रँग लीन्हों कपरवा!
बिनु रे भजन तोरी ई गति होइहै,
बाँधल जैबे तू जम के दुवारवा!
'दूलनदास' के साईं जगजीवन,
हरि के चरन पर हमरो लिलरवा!

नागरी दास

(१७५)

हमारी सब ही बात सुधारी
कृपा करो श्री कुंजबिहारिनि, अरु श्री कुंजबिहारी!
राख्यो अपने बृंदावन में, जिहि ठा रूप उजारी,
नित्य केलि आनन्द अखंडित, रसिक संग सुखकारी!

कबहुँ कलेस न व्यापै इहि ठा, बिस्व तें न्यारी,

नागरिदासहिं जनम जितायो, बलिहारी बलिहारी !

भगवत रसिक (१७६)

नमो नमो बृंदाबन चंद

नित्य, अनंत, अनादि, एकरस,

पिय प्यारी बिहरत स्वछंद !

सत्त-चित्त-आनन्द रूपमय

खग-मृग, द्रुम-बेली बर बृंद !

भगवत रसिक निरंतर सेवत

मधुप भये पीवत मकरंद !

सरस माधुरी (१७७)

जगत में भगति बड़ी सुखदानी

जो जन भगति करे केशव की, सर्वोत्तम सोइ पानी,

आपा अर्पण करे कृष्ण को, प्रेम प्रीति मन मानी !

सुमरे सुरुचि सनेह श्याम को, सहित कर्म मन बानी,

श्रीहरि छवि में छको रहत नित, सोइ सच्चा हरि ध्यानी !

सब में देखे इष्ट आपनो, निज अनन्य पन जानी,

नैन नेह जल द्रवत रहत , नित, सर्व अंग पुलकानी !

हरि मिलते हित नित उमगे चित, सुध बुध सब बिसरानी,

विरह व्यथा में व्याकुल निशिदिन, ज्यों मछली बिन पानी !

ऐसहि भक्तन के वश भगवन, वेदन प्रगट बखानी,

सरस माधुरी हरि हँस भेंटें, मेटै आवन जानी !

* ईश्वर स्तुति *

हे जग नायक विश्व विनायक, हे जग जीवन के धन हे,
हे दुःख भंजन जन मन रंजन, जय जय आनन्द के धन हे !

गुरु पितु माता सब जग त्राता, मनुज रूप नर नागर हे,
हे निर्गुण हे निराकार प्रभु, निर्भय निगम निरंजन हे !

व्यक्त तुम्हीं अव्यक्त तुम्ही हो, सत-चित-आनन्द रूप विभो,
गुणागार गोतीत अगोचर, अनुभव गम्य अजेय प्रभो !

सब के स्वामी अन्तरयामी, पारब्रह्म परमेश्वर हे,
करुणा सागर सब गुण आगर, सत चित प्रेम निकेतन हे !
हे जगत्राता विश्व विधाता, हे सुख शान्ति निकेतन हे,
प्रेम के सिन्धु दीन के बन्धु, दुःख दारिद्र बिनाशन हे !
नित्य अखण्ड अनन्त अनादि, पूरण ब्रह्म सनातन हे,
जग-आश्रय जगपति जग वन्दन, अनुपम अलख निरंजन हे !
प्राणसखा त्रिभुव न प्रतिपालक, जीवन के अवलम्बन हे,
हे जगत्राता विश्व विधाता, हे सुख शान्ति निकेतन हे !

(178)

हरि हरि जपहु पिआरिआ गुरमति ले हरि बोल!
मन सच करवटी लाईये तुलिये पूरै तोल!
कीमत किनै न पाईए रिद माणक मोल अमोल!
भाई रे हरि हीरा गुरु मांहि ----
सतसंगत सतगुरु पाईये अहि निसि सबद सलाह!!
सच वखरु धन रासि लै पाईये गुर परगास!
जिउ अगन मरै जल पाईये तिउ त्रिसना दासनिदास!
जम जंदारू न लगई इउ भउजल तरै तरास!!
गुरुमुख कुडू न भावई, सच रत्ते सच भाइ!
साकत सच न भावई, कूड़ै कुड़ी पांइ!
सच रत्ते गुर मेलिये सचे सच समाइ!
मनमहि माणक लाल नाम रतन पदारथ हीर !!
सच बखर धन नाम है, घट घट गहिर गंभीर!
'नानक' गुरमुख पाईये, दया करे हरि हीर!!

(179)

आपे रसीआ आप रस आपे रावण हार!
आपे होवे चोलडा आपे सेज भतार !
रंग रता मेरा साहिब रवि रहिआ भरपूर!!
आपे माछी मछली आपे पाणी जाल!
आपे जाल मणकड़ा आपे अंदर लाल!!
आपे बहुविधि रंगुला सखीए मेरा लाल !
नित रवै सोहागणी देख हमारा हाल!!
प्रणवै 'नानक' बेनती तू सखर तू हंस!
कंडल तू है कवोआ तू है आपे वेख विगंस!!

(178)

राम नाम मन बेधिया अवर कि करी विचार !

सबद सुरत सुख ऊपजै प्रभ रातऊ सुख सार !

जिउ भावै तिउ राख तूँ, मैं हरिनाम अधार !!

मन रे साची खसम रजाई ----

जिन तन मन साज सिंगारिआ तिस सेती लिव लाइ !!

तन बैसंतरि होमिए इक रत्ती तोल कटाइ !

तन मन समधा जे करी अनुदिन अगन जलाइ !

हरिनामै तुलि न पुजई जे लाख कोटि करम कमाइ !!

साधु मिलै साधू जनै संतोख बसै गुर भाइ !

अकथ कथा वीचारीऐ जे सतगुर माहि समाइ !

पी अम्रितु संतोखिआ दरगह पैधा जाइ !!

घट-घट वाजै किंगुरी अनुदिन सबद सुभाइ !

विरले कउ सोझी पई गुरमुख मन समुझाइ !

नानक नाम न बीसरै छूटै सबद कमाइ !!

(179)

धन जीवन अरु फुल्लडा नाठीअड़े दिन चार !

पवण केरे पत जिउ ढूलि ढूलि जंमण हार !!

रंग माण ले पिआरिआ जा जीवन नउहुला !

दिन थोड़ड़े थके ने भया पुराणा चोला !!

सजण मेरे रंगुले जाइ सुते जीराणी !

हंभीं वंजा डूमणी रोवाँ झीणी वाणि !!

की न सुमेही गोरीए आपण कंनी सोइ !

लगी आवह साहुरै नित्त न पेइआ होइ !!

नानक सुत्ती पेईऐ जाण विरति संन !

गुणा गंवाई गाँठड़ी अवगण चली बंन !!

ॐ गुरुवे नमः